॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जनवरी 2018 वर्ष 21, अंक 1 | दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 | वार्षिक शुल्क 100 रुपये
विक्रमी सम्वत् 2074 | दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 | ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये | कुल पृष्ठ 20

गण से दूर होता तन्त्र

❒ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

हम हर वर्ष 26 जनवरी के दिन गणतन्त्र दिवस राष्ट्रीय स्तर पर बड़े धूमधाम से मनाते हैं वैसे तो गणतन्त्र दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है लेकिन हम गंभीरता से चिंतन करें क्या हम इस राष्ट्रीय पर्व को मनाने की सार्थकता को सिद्ध कर पा रहे हैं या केवल लकीर पीटते हुए इसे मनाते हुए हमें जोड़ने का कार्य करता है और फिर गणतन्त्र दिवस जिस दिन स्वतन्त्रता के उपरान्त हमने स्वयं अपने लिए अपने संविधान को लागू किया था। इस पवित्र दिवस पर हम अपने देश की दशा और दिशा का आंकलन अवश्य करें। किसी भी देश की आयु के संदर्भ में मात्र 63 वर्ष की आयु बाल्यवस्था ही मानी जाती है। लेकिन इस बाल्यावस्था में ही हमारा राष्ट्र इतनी गंभीर व्याधियों से ग्रस्त हो चुका है। शायद इसीलिए गणतन्त्र दिवस के अवसर पर यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि हम इस पर आत्मचिंतन करें।

गणतन्त्र दिवस पर आत्मचिंतन करते हुए हम कई कड़वी सच्चाइयों को समस्याओं की भांति अपने सामने खड़ा पाते हैं। सबसे बड़ी और कड़ी हकीकत यह है कि गणतन्त्र दिवस के जिस पावन अवसर पर स्वयं के बनाए संविधान के अंतर्गत लोक अथवा गण के जिस तन्त्र का निर्माण किया था आज वही तन्त्र गण से दूरी बनाकर उसकी सेवा के स्थान पर उसका शोषण कर रहा है। संविधान के अन्तर्गत एक लोकतंत्रीय व्यवस्था में जनता की सरकार, जनता के द्वारा जनता के लिए चुनकर जनता की सेवा के उद्देश्य से एक तन्त्र का निर्माण किया गया। परन्तु जनता की सेवा के मूल उद्देश्य से भटक कर यह तन्त्र जनता का शोषण करके स्वयं समृद्धि करने लगा और 'जनसेवक' लोकतन्त्र के शोषक तानाशाहों के रूप में परिवर्तित हो गए और गण अधिकारियों, नेताओं और अपराधियों के गठजोड़ की चक्की में पिसने के लिए मजबूर हो गया।

किसी भी बीमारी के इलाज के लिए आवश्यक है कि हम उसके कारणों को जानकर दूर करने का प्रयास करें ताकि उस बीमारी से निजात पाया जा सके। गणतन्त्र दिवस पर तन्त्र और गण में दूरी, और तन्त्र द्वारा गण के शोषण के कारणों पर चिंतन करना नितांत आवश्यक हो जाता है। दरअसल लोकतंत्रीय व्यवस्था में जनसेवक नेताओं ने जनसेवा के स्थान पर राजनीति को व्यापार और सत्ता प्राप्ति का साधन बना लिया। सत्ता को जनसेवा के मूल उद्देश्य से हटाकर स्वयं समृद्धि में लगा दिया और स्वयं समृद्धि को जन सेवा का पर्याय बनाकर जनता का शोषण करने लगे। जनता के अंतहीन शोषण दोहन के लिए संविधान के इन निर्माताओं पालकों ने स्वयं को संविधान से उपर स्थापित करके जन सेवा के पावन उद्देश्य के लिए बने तन्त्र का उपयोग जनशोषण के लिए करना प्रारंभ कर दिया। धीरे-धीरे देश में संविधान से उपर नेताओं अधिकारियों और अपराधियों का एक नापाक गठजोड़ बन गया और जनता इनके इस मकड़जाल में फंस गई।

इस नापाक गठजोड़ में आज के राजनेता लोकतन्त्र के तानाशाहों अधिकारी वर्ग उनके सामंतों तथा अपराधी हथियारों के रूप में परिवर्तित हो गए। पहले राजनीति का अपराधीकरण हुआ और फिर धीरे-धीरे नेताओं का प्रश्रय पा रहे अपराधियों ने सीधे सत्ता प्राप्ति के लिए अपना राजनीतिकरण कर लिया। जनता के पास पांच साल लोकतन्त्र के चुनावी पर्व के अवसर पर भी नागनाथ और सांपनाथ में से चयन के अलावा और कोई रास्ता शेष नहीं बचा। राष्ट्र की आयु के संदर्भ में मात्र 63 वर्ष की बाल्यावस्था में राष्ट्र, आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार शोषण, वर्ग भेद, जातिगत दंगों, धार्मिक दंगों, बेरोजगारी, नारी पर अत्याचार, पाखंडो, अंधविश्वासों जैसी गंभीर व्याधियों से ग्रस्त हो गया।

इन सबके समाधान का एकमात्र इलाज केवल मात्र आर्य राष्ट्र निर्माण से ही संभव है जब जनता को आर्य सिद्धांतों वेदज्ञान की जागरूकता का अभियान चलाकर जागृत किया जाए और जनता अपने अधिकारों को भली भांति समझकर कर्तव्यों का निर्वहन करे और स्वयं के लिए एक स्वच्छ तन्त्र का निर्माण अपने द्वारा साफ सुथरी छवि एवं आचरण वाले नेताओं को चुनकर करते हुए गण और तन्त्र की दूरी को समाप्त करके एक सुदृढ़ गणतन्त्र का निर्माण करें।

– 502 जी एच 27, सैक्टर-20 पंचकूला, मो. 09467607676

१ जनवरी भारतीय वैदिक नववर्ष नहीं है।

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

डॉ. पूनम सूरी जी के नेतृत्व में शिष्टमंडल मुख्यमन्त्री नितीश कुमार से मिला

राज्य के 'बाढ़ राहत कोष' के लिए 3 करोड़ रूपये की राशि भेंट

राज्य द्वारा 290 बुनियादी शिक्षण संस्थानों को डी.ए.वी. संचालित करें का प्रस्ताव- मुख्यमन्त्री नितिश कुमार

आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी के नेतृत्व में डी.ए.वी. प्रबन्धन का एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल बिहार के मुख्यमन्त्री नितीश कुमार से मिला। इस शिष्टमंडल में मान्य प्रधान जी के अतिरिक्त उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मणिसूरी (समाजसेविका), श्री आर.एस. शर्मा (महासचिव), श्री महेश चोपड़ा (कोषाध्यक्ष), श्री रमेश लीखा (सचिव), डॉ. निशा पेशिन (निदेशक), श्रीमती पुष्पा सोफत (क्षेत्रीय निदेशक, हिमाचल प्रदेश) एवं बिहार के सभी क्षेत्रीय निदेशक सम्मिलित थे।

मुख्यमन्त्री जी ने डी.ए.वी. से आए इस शिष्टमंडल का बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया। बातचीत के दौरान मान्य प्रधानजी ने मुख्यमन्त्री को डी.ए.वी. का वर्तमान स्वरूप, उसकी गतिविधियों, योजनाओं और सरोकारों से परिचित करवाया। इसके लिए प्रबंधन समिति के द्वारा प्रकाशित विभिन्न प्रकार का साहित्य मुख्यमन्त्री को भेंट किया गया।

इस विशेष भेंट का उद्‌देश्य स्पष्ट करते हुए डॉ. सूरी ने मुख्यमन्त्री के सामने बिहार में आयी बाढ़ से उत्पन्न स्थिति की चर्चा की और बिहार में कार्यरत डी.ए.वी. विद्यालयों द्वारा आपदा की इस

घड़ी में प्रभावित जनसमूह की सहायता के लिए लगाए गए शिविरों, वितरित की गई सामग्री इत्यादि का विवरण प्रस्तुत किया और निवेदन किया कि डी.ए.वी. का यह शिष्टमंडल राज्य के 'बाढ़ राहत कोष' में 3 करोड़ रूपये की राशि देने के लिए उपस्थित हुआ है।

मुख्यमन्त्री श्री नितीश कुमार ने बिहार में डी.ए.वी. की उपस्थिति को लेकर कहा कि मैं राज्य में डी.ए.वी. द्वारा दी गई शिक्षा और सेवा को बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ और इस अमूल्य सेवा के लिए मैं प्रबंधन समिति और संस्थाओं का हार्दिक धन्यवादी भी हूँ। मानव निर्माण, शिक्षा और सेवा-डी.ए.वी. के इन तीन उद्‌देश्यों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने अपनी कृतज्ञता प्रकट की। मुख्यमन्त्री ने शिष्टमंडल को बताया कि बिहार इस वर्ष 'चम्पारण सत्याग्रह' का शताब्दी वर्ष मना रहा है और सरकार गांधीजी के दर्शन पर आधारित 290 बुनियादी शिक्षा की संस्थाएँ चला रही हैं। उन्होंने डॉ. सूरी जी से यह अपील की कि डी.ए.वी. प्रबंधन ऐसी संस्थाओं को चलाने का कार्यभार अपने जिम्मे लेकर इस राज्य की अमूल्य सेवा कर सकता है। डॉ. सूरी ने इस प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए निवेदन किया कि डी.ए.वी. का यह सौभाग्य होगा, क्योंकि बुनियादी शिक्षा डी.ए.वी. के उद्‌देश्यों में से एक उद्‌देश्य है। उन्होंने कहा कि इसकी औपचारिकताएँ डी.ए.वी. की व्यवस्था के अनुसार हो सकेंगी।

कुल मिलाकर यह भेंट बहुत ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुई और इससे बिहार में डी.ए.वी. के कार्यक्रमों के विस्तार और सफलता की सम्भावनाओं को बल मिला है।

आओ, चलें फिर टंकारा

गुजरात-काठियावाड़ (सौराष्ट्र) के एक छोटे से गाँव टंकारा ने पूरे विश्व के ऐतिहासिक स्थलों में अपना नाम अंकित करवा लिया है। सौभाग्य प्राप्त है इस टंकारा की धरती को जिसने महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे महान ऋषि को जन्म दिया। प्रत्येक महापुरुष का जन्मस्थान एवं निर्वाण स्थान का एक विशेष महत्व रहता है। आर्यों के लिए टंकारा और अजमेर दो ऐसे प्रमुख स्थान हैं जिनका ऋषि के जीवन से एक ऐतिहासिक सम्बन्ध है। जब तक इस वेदों वाले ऋषि की महिमा लिखी या गायी जाती रहेगी टंकारा का नाम तब तक गूंजता रहेगा।

महर्षि के अनुयायी देव दयानन्द के दीवानों के लिए टंकारा जन्मभूमि एक विशेष महत्व रखती है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के अवसर पर ऋषि बोधोत्सव बहुत हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया जाता है। पिछले असंख्य वर्षों से ऋषि भक्त वहां एकत्र हो ऋषि के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते रहे हैं और ये सिलसिला निरन्तर इसी प्रकार चलता जा रहा है।

ऋषिगृह का वह कमरा जहां ऋषि का जन्म हुआ था, सुरक्षित रखा गया है और लोगों का उसे देखने का एक विशेष उत्साह रहता है। महर्षि के घर के अन्य भागों में उनके जीवन चरित्र पर आधारित एक चित्रावली भी प्रदर्शित की गयी है। जो अपने-आप में दर्शनीय है। समय के साथ-साथ प्रतिवर्ष आने वाले ऋषि भक्तों की संख्या बढ़ती जा रही है। ऐसे असंख्य चर्चित चेहरे हैं जो प्रतिवर्ष पिछले कई वर्षों से इस उत्सव पर पधारते हैं। ये वह लोग हैं जिन्होंने आमरण इस अवसर पर ऋषि जन्मभूमि पर आने की प्रतिज्ञा ले रखी है। यहां स्मरण हो आते हैं कि स्वामी आत्मबोध सरस्वती (आनन्द भिक्षु जी) जो बोधोत्सव के मंच से कहा करते थे कि इस उत्सव पर या मेरे आने की सूचना आयेगी या मेरे मरने की सूचना आएगी। और इसी से प्रभावित हो कई ऋषि भक्तों ने ऐसा प्रण किया हुआ है।

कुछ ऋषि भक्त ऐसा भी कहते सुने गये हैं कि इस ऋषि भूमि में एक ऐसा आकर्षण है कि वह स्वयं ही इन दिनों में हमें आकर्षित करती है और हम यहां आकर पूरे वर्ष के कार्य-कलापों का मंथन करते हैं और एक नई स्फूर्ति (बैटरी चार्ज करके) लेकर वापिस जाते हैं और पूरे वर्ष यही स्फूर्ति हमें आर्य समाज के क्षेत्र में कार्य करने के लिए उत्साहित एवं प्रेरित करती रहती है।

कुछ ऋषि भक्त ऋषि भूमि टंकारा पर प्रथम बार आते हैं केवल पर्यटक बन कर और भूमि के आकर्षण में इतने मग्न हो जाते हैं कि फिर प्रतिवर्ष टंकारा आते रहते हैं। शिवरात्रि जिन दिनों में होती है लगभग उन्हीं दिनों में स्कूल और विश्वविद्यालयों में युवाओं की वार्षिक परीक्षा हो रही होती है, इस कारण युवा वर्ग इन दिनों बोधोत्सव पर बहुत कम सम्मिलित हो पाता है। लेकिन पारिवारिक संस्कारों एवं प्रेरणा से लगभग पूरे वर्ष युवा दंपती एवं नवयुवक ऋषि भूमि के दर्शनार्थ आते रहते हैं। कुछ आर्य शिक्षण संस्थाओं ने अपने विद्यालय में ऐतिहासिक स्थलों पर विद्यार्थियों को ले जाने के लिए जो कार्यक्रम बनाते हैं उसमें टंकारा को भी सम्मिलित कर लिया है और वर्ष में एक-दो विद्यालय के छात्र-छात्राएं यहां आते हैं और एक रात्रि ठहर कर आगे चले जाते हैं। इच्छुक छात्र-छात्राएं यहां से प्रचारार्थ वैदिक साहित्य भी साथ ले जाते हैं। इसी प्रकार विदेशों से भी प्रतिनिधि मंडल लगभग पूरे वर्ष ऋषि जन्मभूमि पर आते रहते हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग के शिविर भी यहां आयोजित किये जाते हैं। टंकारा ट्रस्ट ही नहीं अन्य संस्थायें भी टंकारा में उपलब्ध सुविधाओं को देखते हुए शिविर स्थल टंकारा परिसर में ही रखते हैं। इसी के साथ स्वास्थ्य से संबंधित कई निःशुल्क शिविर भी आयोजित किये जाते हैं। टंकारा में होम्योपैथिक एवं एलोपैथिक चिकित्सालय एवं जांच केन्द्र की भी सुविधा उपलब्ध है।

इस पवित्र भूमि पर विश्व प्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय उपदेश महाविद्यालय भी सुचारु रूप से चल रहा है और इस समय लगभग 200 विद्यार्थी जहां स्नातक एवं स्नातकोत्तर परीक्षाओं के लिए तैयार हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर आर्य समाज के क्षेत्र में वेद-प्रचार हेतु उच्चकोटि के उपदेशक भी तैयार किये जा रहे हैं। इस विद्यालय को गर्व है कि इसके द्वारा प्रशिक्षित उपदेशक आज भारत ही नहीं विश्व की अनेक जगहों पर आर्य संस्थाओं से जुड़ कर वेद-प्रचार का कार्य कर रहे हैं।

ऋषि बोधोत्सव पर और टंकारा में प्रत्येक वर्ष आने वाले ऋषि भक्तों के लिए नया कुछ भी नहीं, लेकिन फिर भी उस देव दयानन्द के प्रति अपार श्रद्धा एवं जन्मभूमि का आकर्षण उन्हें प्रत्येक वर्ष इस उत्सव पर स्वतः ही आकर्षित कर लेता है।

मैं आह्वान करता हूं उन सभी ऋषि भक्तों का, जो वर्षों से आर्य समाज एवं आर्य संस्थाओं से जुड़े हुए हैं और निरन्तर कई वर्षों से देव दयानन्द के अधूरे स्वप्न को पूर्ण करने के लिए दिन रात प्रयासरत हैं, लेकिन अभी तक टंकारा जन्मभूमि पर नहीं पधारे हैं। उन सभी से आग्रह है कि वह ऋषि जन्मभूमि पर अवश्य पधारें और उपरोक्त लिखी सभी बातों का स्वयं आलोकन कर उस आकर्षण को महसूस करें जो अन्य ऋषि भक्त यहां प्रति वर्ष आ कर महसूस करते हैं। निर्णय लें कि आप स्वयं तो इस वर्ष टंकारा आयेंगे ही साथ ही और लोगों को भी 'आओ चलें फिर टंकारा' की प्रेरणा देंगे।

अजय टंकारावाला

आप ऋषि जन्मभूमि हेतू दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0466500 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी हैं मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

दान धर्म

शादलिन् इत्राद् दिल्लै इनिद्दू उम्।
ईदल् इयैयाक् कडै।

संसार में मृत्यु से बढ़कर कोई दु:खदायी प्रसंग नहीं होता। परन्तु आपके पास कोई दान की आशा से आया हो और आप उसे यत्किंचित् देने में असमर्थ हों कवि कहता है कि मृत्यु से भी बढ़कर यह दु:खदायी बात हो जाती है। मृत्यु भी हल्की पड़ जाती है।

स्वार्थ पूर्ण संग्रह की भावना से सभ्यता का निर्माण नहीं होता है। मानवीय सभ्यता की नींव है त्याग, दान सेवा। समाज और व्यक्ति एक दूसरे के पूरक हैं। यदि व्यक्ति समष्टि में अनुस्यूत हो जाये और समाज भी व्यक्ति की सर्वागीण उन्नति में सहायक हो जाये तो धरती पर स्वर्ग बन जाए।

धन का मोह कर्तव्य भावना में बाधक होता है। धन के कारण ही समाज और व्यक्ति में अशान्ति एवं बहुत ज्यादा दूरी होती है, तो ऐसा मोह त्याज्य है।

''सम्पत्ति सब रघुपति कै आही'' विश्व की समस्त सम्पदा का स्वामी तो प्रभु है तो फिर यह मोह, अहंकार, बड़प्पन सब कुछ अस्थिर है।

राजा जनक का उदाहरण कितना समीचीन है। अनन्त समृद्धि ऐश्चर्य के मध्य भी राजा जनक जल में कमल की भांति जीवन यापन करते थे। अत: वे विदेह कहलाते थे। राजा जनक कहते थे–

अनन्तं बत में वित्तं यस्य में नास्ति किंचन।
मिथिलायां प्रदीप्तायां न मे दहयति किंचन॥

मेरे पास अपार सम्पत्ति है। पर मेरा अपना कुछ भी नहीं है। यदि सम्पूर्ण मिथिला भी राख हो जाय तब भी मुझ जरा भी दु:ख नहीं होगा।

सत्पात्रं महती श्रद्धा देशे काले यथोचिते।
यद्दीयते विवेकज्ञैस्तदनन्ताय कल्पते॥

सज्जन जो दान उचित व्यक्ति को अत्यन्त श्रद्धा से यथा समय करते हैं। ऐसा दान अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं फल दाता होता है, क्योंकि वेदों में वचन है:

यो देवकामो न धनं रूणद्धि, समित् तं राय: सृजति स्वधाभि:।
अथर्व 7.50.6

जो मनुष्य अच्छे कामों के लिए अपना धन दान देता है। उसे सभी दिशाओं से ऐश्वग्र की प्राप्ति होती है। सज्जन व्यक्ति तो आवश्यकता अनुभव वाले को उसकी वांछित वस्तु देना चाहता है।

'' न तथा रत्नमासाध्य सुजन: परितुष्यति।
यथा तत् तद्गता कांक्षे पात्रे दत्वा प्रहृष्यति॥''

अत्यन्त बहुमूल्य वस्तु (रत्न) पाकर भी सज्जन व्यक्ति इतना प्रसन्न नहीं होता जितना कि चाहने वाले सत्पात्र को देकर हर्षित होता है।

''दानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्य:॥'' पंचतन्त्र 2/155

दान के समान अन्य कोई सम्पत्ति नहीं होती है।

दीयमानं हि नापैति भूय एवाभिवर्धते।
कूप उत्सिच्यमानो हि भवेत् शुद्धो बहूदक:॥

स्कन्द पुराण 2/61

दान में दिया गया धन घटता नहीं है। किन्तु उसकी वृद्धि ही होती है, कुएं से जल बाहर निकालने पर कुआं स्वच्छ तथा अभिवर्धित जल से युक्त हो जाता है।

नित्यं दानरतोऽसक्तों दत्वा यश्च प्रमोदते।
जन संपूजितयास्य कृतिन: सफलो भव:॥

बुद्ध चरित 18/63

जो मनुष्य निरन्तर अनासक्त भाव से दान करता हुआ हर्षित होता है, समाज द्वारा सम्मानित उस सत्पुरुष का जन्म सफल होता है।

''श्रद्धया देयम्॥'' तेत्तरीय उपनिषद् 1/11

अत्यन्त श्रद्धा सम्मान पूर्वक ही दान करना चाहिए।

ध्यानं परं कृतयुगे त्रेतायां यज्ञ उच्यते।
वृत्तं च द्वापरे सत्यं दानमेव कलौ युगे॥

स्कन्द पुराणम्।

सत्य युग में ध्यान, स्मरण, त्रेतायुग में यज्ञ का आधान, द्वापर युग में सत्यवादी तथा कलियुग में दान परम श्रेष्ठ पुण्य काम है।

– संकलन आर्यवीर आर्य, फरीदाबाद

जब दुनिया कहती है कि हार मान लो
तो उम्मीद धीरे से कान में कहती है
एक बार फिर प्रयास करो

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 7000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

हम दान देने में आनन्दित हों

❒ डॉ. अशोक आर्य

हमारा जीवन यग्य के समान हो। हम सदा सोम का पान करते रहें तथा दूसरों को दान देने में हम आनन्द का अनुभव करें। इसकी चर्चा इस मन्त्र में इस प्रकार की गई है:-

उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिव।
गोदा इन्द्रेवतो मदः। ऋग्वेदः 1.4.2।।

विगत मन्त्र में प्रभु भक्त ने अत्यन्त तथा मधुर इच्छाओं वाले बन कर अपने प्रभु से एक प्रार्थना की थी। इस मन्त्र में चार बातों पर विचार देते हुए अपने भक्त की प्रार्थना को सुनकर प्रभु भक्त से कह रहे हैं कि हे भक्त! तू हमारे यग्यों को समीपता से प्राप्त होकर निरन्तर वेद में प्रतिपादित, वेद में वर्णित यग्य आदि कर्मो को कर।

1. प्रभु का आदेश है कि हम यग्यों को समीपता से करें तथा इन्हें वेदादेश के अनुरूप करे। इससे स्पष्ट है कि हम जिन यग्यों को करते हैं, उनमें अपनी भागीदारी बनाए रखें, इन्हें दूसरों पर न छोड़ें। जिस प्रकार आजकल नौकरी प्रवृत्ति परिवारों में चल रही है। उस प्रवृत्ति का अवलम्बन करते हुए नौकर अथवा परिवार के किसी सद्स्य से यह यग्य न करवायें अपितु स्वयं को यग्यों का भाग बना कर करें। स्वयं इन यग्यों को करने में संलिप्त हों।

मन्त्र यह भी आदेश दे रहा है मि जो भी यग्यादि कर्म करें वह इस प्रकार करें जैसे कि वेद के माध्यम से परम पिता ने करने का आदेश दिया है। इसका भाव है कि हम पहले वेद के माध्यम से स्वाध्याय कर वेद में दिए अर्थ समझें फिर तदनुरूप यग्य करें। यग्य का मुख्य अर्थ है दान व परोपकार। दूसरों की सहायता करना, दूसरों को उपर उटाने के लिए अपने अर्थ संग्रह का कुछ भाग उनकी सहायतार्थ देना, दान काना, प्रभु से संगतिकरण करना, प्रभु के बनाए संसार को वैसा ही स्वच्छ व सुन्दर बनाए रखना, जैसा कि उस पिता ने हमें दिया था, जिसके लिए अग्निहोत्र करना। यह ही तो यग्य की भावना है। इस भावना को सम्मुख रखते हुए हम जो दानादि कर्म करें, उसमें स्वयं को इस प्रकार लिप्त करें कि दान तो हम करें किन्तु यह देते हुए हम किसी प्रकार का एहसान या प्रतिफल न चाहें। परमपिता परमात्मा बता रहे हैं कि हे यग्यिक पुरुष। जब तूं यह सब कार्य कर रहा है तो मैं समझता हूँ कि तूं सच्चे मन से मेरी आराधना कर रहा है।

2. मन्त्र जिस दूसरी बात पर प्रकाश डाल रहा है, वह है सोम कणों की रक्शा। पिता कह रहा है कि हे सोमकणों की रक्शा करने वाले आराधक। तु अपने इस शरीर में सोमकणों की रक्शा कर। भाव यह हे कि वेद ने शक्ति को सोम स्वीकार किया है। जिस मानव के पास शक्ति है, जिसका शरीर स्वस्थ है, जिसके शरीर से कान्ति छलक रही है, वह पूर्णतया निरोग होता है। जिस के पास शक्ति ही नहीं है, रोग निरोधक तत्व ही नहीं है, वह रोग से मुक्त कैसे रह सकता है? जब वह रोगों से ही ग्रसित है तो दु:ख ही उसके जीवन का मुख्य भाग बन कर रह जाते हैं। दु:खी व्यक्ति अपने आप को ही नहीं सम्भाल सकता, ग्यान का अर्जन ही नहीं कर सकता दूसरों का क्या ध्यान करेगा। इसलिए मानव का सशक्त होना आवश्यक है। जो सशक्त होगा वह ग्यान आदि को प्राप्त कर उत्तम कर्म कर करेगा।

इसलिए पिता ने अपने भक्त को आशीर्वाद देते हुए उपदेश किया है कि हे मेरे आराधक! तूं अपने शरीर में शक्ति का संचय कर, शरीर में सोमकणों का संग्रह कर। फिर हम इन सोम कणों की ग्यान की अग्नि में आहुति दें अर्थात् हम अपने जीवन में एकत्र की इस शक्ति को ग्यान प्राप्त करने में लगावे। उत्तम से उत्तम, उच्च से उच्च ग्यान प्राप्त करने के लिए सदा प्रयास करें तथा हम ने जो शक्ति, जो सोम अपने शरीर में एकत्र किया है उसे इस सर्वश्रेष्ठ यग्य अर्थात् ग्यान को प्राप्त करने में व्यय करें। यह सोम कण ही हैं जो ग्यानग्नि में घी का कार्य करते हैं, इसे प्रचण्ड करते हैं, इसे तीव्र करते हैं।

3. मन्त्र के तीसरे भाग में वह पिता आदेश कर रहे हैं, उपदेश कर रहे हैं कि हे पवित्र मानव! तुने सोमकणों को तो अपने शरीर में शक्ति कर लिया तथा इन कणों को यग्यादि कर्मो में प्रयोग कर उत्तम ग्यान भी प्राप्त कर लिया, अब इस बात को याद रख कि जो धन तू ने अपने यत्न से एकत्र किया है, जो गौ आदि का संग्रह तूं ने किया है उसके दान में ही तुझे हर्ष है, तुम्हें इस सब के दान में ही आनन्द की अनुभूति है। जब तक तूं दिल खोल कर इस धन का सदुपयोग दानादि कार्यो में नहीं करता तब तक तुझे अपार अनान्द नहीं मिलने वाला है। अत: दिल खोल कर दान कर। दान में ही धनवान का आनन्द छुपा है। इस आनन्द को पाने के लिए दान कर।

4. मन्त्र के इस चतुर्थ व अन्तिम भाग में परमपिता परमात्मा अपने आराधक को, अपने भक्त को तीन निर्देश देते हुए कह रहे हैं कि:-

(क) हे भक्त! तूं यग्यादि परोपकार के कार्यो में निरन्तर व्यस्त रहते हुए अपने अन्दर के क्रोध का दमन कर। क्रोध सब प्रकार के यग्यों का शत्रु है। एक व्यक्ति दान कर रहा है और दान करते हुए भी उसे क्रोध आ रहा है। क्रोध में जलते हुए वह कह रहा है कि मुफ्त में यह सब मिल रहा है किन्तु फिर भी इन्हें सबर नहीं, लेने का टंग नहीं, एक पंक्ति में खड़े होकर ले भी नहीं सकते। दान देकर भी उसे शान्ति नहीं मिलती। इसलिए दान दाता को क्रोध को अपने निकट नहीं आने देना चाहिए, उसके क्रोध से दूरी बनाए रखना आवश्यक है।

(ख) मानव का ध्येय सोमपान हो। सोम शक्ति का साधन है। अत: वह जीवन में निरन्तर इस सोम का पान करते हुए अपने शरीर में शक्ति का संचार करता रहे। इस सोम की शरीर में रक्शा करने के लिए उसका संयमी होना भी आवश्यक है। यदि वह अपनी इन्द्रियों को संयमित नहीं कर सकता, अपने काबू में नहीं कर सकता तो वह काम आदि में इस सोम को नष्ट करने लगेगा। जो साम शरीर में ग्यान का प्रकाश करने के लिए एकत्र किया गया था, संयम के अभाव में वह काम आदि में नष्ट हो जाता है। इसलिए मन्त्र आदेश दे रहा है कि शरीर में सोम को एकत्र कर संयम में रहते हुए कामादि दुर्गुणों से बचना चाहिए।

(ग) जब मानव लोभ से उपर उट कर दानादि कर्म करता है तो उसे आनन्द की अनुभूति होती है। इस लिए मन्त्र उपदेश कर रहा है कि हम कभी लोभ न करें। जब हम लोभी होते हैं तो यदि हम दान भी करने लगते हैं तो उसमें भी या तो कुछ बचाने की इच्छा रखते हैं या फिर जिसको हम दान दे रहे हैं, उस पर बहुत बड़ा एहसान दिखाते हुए, उससे कुछ प्रतिफल की भी आशा करते हैं। यह दान नहीं माना

जा सकता। तब ही तो मन्त्र कह रहा है कि हम लोभ से ऊपर ऊठकर दान करें तो हमें आनन्द आवेगा।

हम दान देते समय क्रोध न करें। दान दया की भावना से होता है किन्तु जब दान देते हुए भी हम क्रोध करते हैं तो इसमें दया की भावना नहीं रह पाती क्योंकि क्रोध से ऊपर उटने को ही दया कहा गया है। अत: हम जो भी दनादि कर्म करें, वह सब दया भाव से करें।

दान के समय हम अपने अन्दर की वासनाओं का भी दमन करें। काम एक ऐसा तत्व जो हमारे सोमकणों का नाश करता है। अत: काम को हम अपने निकट भी न आने दें। जब तक हमारे अन्दर काम की भावना है, तब तक हम दानशीलता हो ही नहीं सकते क्योंकि काम सब शक्तियों को नष्अ करता है। कामी व्यक्ति शक्ति की कमी के कारण खुलकर मेहनत नहीं कर सकता। बिना मेहनत के धनार्जन नहीं होता और जब हमारे पास धन का ही अभाव है तो हम दान कैसे कर सकते हैं? अत: काम से बचना आवश्यक है। जब हम काम से ऊपर उटते हैं तो इसे ही ''दमन'' कहते हैं।

मानव जीवन में लोभ भी उसका एक बहुत बड़ा शत्रु है। यह देखा गया है कि लोभी व्यक्ति अपने पास अपार धन सम्पदा होते हुए भी जीवन के सुखों से, दानादि कर्म से वंचित ही रहता है। यहां तक कि कई बार तो ऐसे लोग भी देखने को मिलते हैं, जो रूग्ण होते हैं, पास में अपार धन सम्पदा होते हुए भी लोभ वश वह अपने का स्वयं के रोग का निदान करने में भी कुछ भी व्यय नहीं करने को तैयार होते, दूसरे की सहायता तो क्या करेंगे? ऐसा धन तो मिट्टी के टेले के समान ही होता है। इसलिए मन्त्र कहता है कि हम अपने जीवन में लोभ को स्थान न दे। जो लोभ से ऊपर उट जाता है, वह ही दानी हो सकता है।

ये परमपिता परमात्मा के तीन आदेश हैं। इन तीन आदेशों को उस पिता ने असुरों, मानवों तथा देवों को समान रूप से दिया है। समान रूप से आदेश देने का भाव यह है कि उस पिता ने बिना किसी भेदभाव के सबको समान अवसर देते हुए उत्तम बनने के लिए प्रेरित किया है। उपअनिषद् में भी तीन ''द'' दिए हैं। इन तीन ''द'' के माध्यम से दया, दमन तथा दान का आदेश उपनिषद ने किया है। इन तीनों का ही इस मन्त्र में उपदेश है। तीनों पर चलने के लिए ही तीनों प्रकार के प्राणियों को आदेश प्रभु ने दिया है। जो इन पर चलता है वह आनन्द विभोर हो जाता है, जो नहीं चलता वह जीवन प्रयन्त दु:खों में डूबा रहता है।

– 104, शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी, गाजियाबाद

गौ–दान : महा–दान

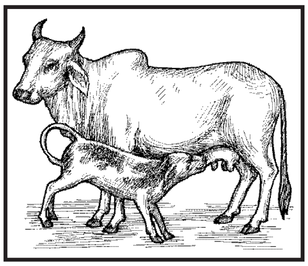

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन– प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/–** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप–प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी **बोधोत्सव 12, 13, 14 फरवरी 2018** को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 01 जनवरी 2018 तक भिजवाकर कृतार्थ करे। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग, स्वास्थ्य एवम् अन्य उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हो। ऐसा निर्णय किया है कि प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई दो या तीन पुष्ठों से अधिक न हो तो सुविधाजनक रहेगा। आप प्रकाशनार्थ सामग्री ईमेल **tankarasamachar@gmail.com** पर ''वॉकमेन चाणक्य'' टाईप में कम्पोज करके भी भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

अजय, सम्पादक टंकारा समाचार, चलभाष 9810035658

सम्पादकीय कार्यालय: ए–419, ओ३म् ध्वज सदन, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली–110024

वेदों में विज्ञान के उद्घोषकः ऋषि दयानन्द

❑ वेदमार्तण्ड प्रो. डॉ. महावीर मीमांसक (भाग-2)

वेदों में भौतिक विज्ञान का उद्घोष ऋषि दयानन्द की अत्याधुनिक आर्ष दृष्टि का प्रमाण है। यह 21वीं सदी विज्ञान की सदी घोषित हो चुकी है। इस सदी में विज्ञान के अत्यन्त चामत्कारिक आविष्कार विश्व के समक्ष आ चुके हैं तथा अभी और भी अनेक आविष्कार होने हैं। कम्प्यूटर और इन्टरनेट की खोज आज के भौतिक विज्ञान का उत्कृष्ट चमत्कार है। क्लोन बेबी का आविष्कार विज्ञान का एक अद्भुत नमूना है। रोबोट अनेक क्षेत्रों में मनुष्य का स्थान ले रहा है। ऋषि दयानन्द की आर्ष-दृष्टि से यह ओझल नहीं था। भौतिक विज्ञान विश्व में आंधी की तरह फैल रहा है और आधुनिक मनुष्य उसमें उड़ा जा रहा है। जितना भौतिक विज्ञान बढ़ रहा है, धार्मिक साम्प्रदायिक अन्धविश्वासों की जंजीर उतनी ही ढीली होती जा रही है। विज्ञानवाद के सामने साम्प्रदायिक अन्धविश्वासों को बनाये रखना धार्मिक (साम्प्रदायिक) गुरुओं के लिये कठिन होता जा रहा है, उनकी गद्दी बचाये रखने के लिये आज का भौतिक विज्ञान एक बहुत बड़ा अपरिहार्य खतरा और चैलेन्ज बन गया है।

किन्तु ऋषि दयानन्द की यह स्थापना थी कि विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी नहीं हैं अपितु एक दूसरे के पूरक हैं और धर्म का आधार विज्ञान अर्थात् प्राकृतिक नियम, युक्ति और तर्क ही हैं। धर्म वही टिक सकेगा जो विज्ञान को साथ लेकर चले। इसलिये उन्होंने वेद में भौतिक विज्ञान की घोषणा की। केवल घोषणा ही नहीं अपितु वेद के मन्त्रों के आधार पर उन्होंने भौतिक विज्ञान के ऐसे नमूने प्रस्तुत किये कि जिनका आविष्कार उस समय तक नहीं हुआ था। सृष्टि के प्रारम्भ में प्राणी जगत् बिना मैथुन (अमैथुनी सृष्टि) के पैदा हुआ, ऋषि दयानन्द का यह उद्घोष आज के विज्ञान से क्लोन बेबी के आविष्कार से पुष्ट हो चुका है। पृथ्वी के अतिरिक्त अन्य ग्रहों पर भी जीवन है, यह तथ्य आज के विज्ञान, नासा की खोज के द्वारा पुष्ट हो गया है, जिसे ऋषि दयानन्द ने शतपथ ब्राह्मण का. 14 ''एते हीदं सर्वं वासयन्ते'' इत्यादि के आधार पर सत्यार्थ प्रकाश के 8वें समुल्लास में सन् 1875 में ही लिख दिया था। प्रलय में काल की सत्ता और प्रलयकाल की अवधि आज के सृष्टिविज्ञान वेत्ता स्टीफन्स हाकिन्स ने अब सिद्ध की है जिसे महर्षि दयानन्द ने अपने ''ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका'' में 135 वर्ष पहले लिख दिया था और जिसे अथर्ववेद के का. 19, सू. 53, 54 में लाखों वर्ष पहले बड़े विस्तार से कालविषयक सूक्त में निरूपित कर दिया था, तथा जिस काल का विशद विवेचन भारतीय ज्योतिष शास्त्रों में हजारों वर्ष पहले भारतीय ऋषि कर चुके थे और जो कालगणना भारत की विवाह संस्कार आदि की संस्कार परम्पराओं में सुरक्षित रखी जाती हुई ऋत्विक, पुरोहित आदि द्वारा निरन्तर सतत पढ़ी जाती रही। विज्ञान की आधुनिकतम खोज गोल्ड बोसेन द्वारा गोड्ज पार्टिकल (Gods particle) को भारत के हजारों वर्ष पुराने वैशेषिक दर्शन के परमाणुवाद, कपिल मुनि के सांख्य दर्शन के प्रकृतिवाद और ऋग्वेद के नासदीय सूक्त (मं. 10, सू. 129) में खोजा जा सकता है। ऋषि दयानन्द से भी हजारों वर्ष पहले यास्काचार्य ने भी अपने निरुक्तशास्त्र में वेदों में भौतिक विज्ञान का उद्घोष कर दिया था। सूर्य पर जीवन आधारित है-यह तथ्य बतलाते हुए यास्काचार्य ने वैदिक शब्द 'असुर' की निर्वचनीय व्याख्या 'असून प्राणान् राति ददातीत्यसुरः' (सूर्य में ही प्राणदायक जीवनदायक शक्ति है) ऋग्वेदीय मन्त्र ''असुरत्वमेकम्'' में सूर्य का विशेषण 'असुर' के प्रयोग में की। आज स्टीफन्स हाकिन्स कहता है कि धरती पर जीवन तब तक है जब तक सूर्य की सत्ता है, यास्काचार्य ने यह चेतावनी हजारों वर्ष पहले ही दे दी थी। इसी लिये प्रश्नोपनिषद् का ऋषि पिप्पलाद कहता है कि आदित्य सब प्राणों को अपनी रश्मियों में धारण करता है (यत् सर्वं प्रकाशयति तेन सर्वान् प्राणान् रश्मिषु सन्निधते-प्रश्नोपनिषद् 1.6)। सौर ऊर्जा (सोलर एनर्जी) यजुर्वेद के 'इषे त्वोर्ज्जे त्वा. (अ.1.मं.1) में सविता (सूर्य) में ऊर्जा के ज्ञापन द्वारा बतला दी। वेद में ''वैश्वानर'' शब्द की व्याख्या द्वारा हजारों वर्ष पहले यास्क आचार्य ने अपने निरुक्त शास्त्र में वैज्ञानिक पद्धति के परीक्षणात्मक प्रयोग द्वारा यह सिद्ध कर दिया था कि सूर्य ही अग्नि का मूल स्रोत है और भूमि की अग्नि सूर्य के कारण ही है, जिस तथ्य को स्टीफन्स हाकिन्स आज कह रहे हैं।

वैदिक विज्ञान से अनभिज्ञ लोग कह देते हैं कि जब आज का वैज्ञानिक कोई आविष्कार कर देता है तो वैदिक विद्वान कहने लगते है कि यह तो वेद में विद्यमान है। क्या यो ऊपर दर्शाये गये ये वैदिक विज्ञापन के नमूने आधुनिक आविष्कारों के बाद के है? मूर्ख लोगों की आंख अभी भी नहीं खुलें तो कभी भीनहीं खुलेंगी।

ऋषि दयानन्द ने यास्काचार्य द्वारा प्रदर्शित वेदभाष्य की यौगिक (योगरूढ़) पद्धति के आधार पर ही अपना वेद भाष्य किया। ऋषि दयानन्द ने अपनी पुस्तक ''ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका'' के 'वेदविषयविचार' के प्रसंग में तथा अपने वेद भाष्य में अग्नि, वायु, जल आदि देवता वाले मन्त्रों में यथास्थान भौतिक विज्ञान को ही उजागर किया, जिसके लिये यास्क ने निरुक्त में कहा था, ''तिस्र एव देवता, अग्निःपृथ्वीस्थानीयः, वायुर्वेन्द्रोवाऽन्तरिक्षस्थानीयः सूर्योद्युस्थानीयः''।

आधुनिक मानव और विशेषतः आज का नवयुवक आधुनिक भौतिक-विज्ञान पर फिदा है और बात है भी सही। एक मुस्लिम युवक यदि कुरान शरीफ में सृष्टि निर्माण की व्याख्या पढ़ेगा कि खुदा ने कुन कहा और सृष्टि बन गई। तथा वही युवक विद्यालय या महाविद्यालय में विज्ञान की पुस्तकों में सृष्टि की उत्पत्ति विज्ञान के आधार पर पढ़ेगा तो वह कुरआन शरीफ को ताक पर रख देगा। इसी प्रकार एक क्रिश्चियन नवयुवक बाइबिल में सृष्टि रचना के सम्बन्ध में पढ़ेगा कि ईश्वर (गॉड) ने 6 दिन तक सृष्टि रचना की और सातवें दिन रविवार को विश्राम किया। तथा वही युवक विद्यालय या महाविद्यालय में विज्ञान की कक्षा में सृष्टि रचना इससे भिन्न प्रकार से पढ़ेगा तो उस का विश्वास बाइबिल पर से उठ जायेगा। यही स्थिति एक पुराण पाठक छात्र के साथ भी होगी। किन्तु एक वैदिक छात्र का विश्वास वेद पर और भी दृढ़ हो जायेगा जब वह सृष्टि रचना का प्रकार वेद में भी वही पढ़ेगा जो विज्ञान में वर्णित है। यहां तक कि आज के विज्ञान के इन्टरनेट और ग्लोबलाइजेशन (ग्लोबलाइजेशन) की अवधारणा वेद के मन्त्र ''यत्र विश्वंभवत्येकनीडम्'' (वह मन्त्र जिस में समूचा विश्व एक घोसले जितने रूप में समा जाता है) में देखी जा सकती है। वेद इसीलिये अत्याधुनिक (अल्ट्रा माडर्न) और सार्वकालिक है।

आधुनिक मानव और आज का युवक विज्ञान की बात करता है अतः सभी सम्प्रदाय विज्ञान से भयभीत हैं। जितना जितना विज्ञान बढ़ता है सभी सम्प्रदाय प्रभावहीन होते जा रहे हैं। केवल वैदिक धर्म ऐसा है जो विज्ञान का स्वागत करता है। अतः विज्ञान की बढ़त के साथ ही

वैदिक धर्म दृढ़ और स्थायी होता जाता है। ऋषि दयानन्द का यही आर्ष दर्शन है। अत: आर्य बन्धुओ! आप को आधुनिक विज्ञान से डरने की आवश्यकता नहीं है, आप उसका स्वागत कीजिये। ज्यों ज्यों विज्ञान बढ़ेगा, अन्य सम्प्रदाय स्वत: ही नीचे, (समाप्त) होते जायेंगे, केवल वैदिक धर्म का झण्डा ऊंचा जाता जायेगा।

वैदिक विज्ञानवाद महर्षि दयानन्द की सुदीर्घ दूरदर्शिता है जो भारत तथा आर्य समाज को सदैव आधुनिक, प्रासंगिक और समसामयिक बनाये रखेगी। आधुनिक मस्तिष्क और विशेषत: आधुनिक युवक और नई पीढ़ी में आर्यसमाज के प्रचार प्रसार का यह अमोघ अस्त्र है। अत: यह आवश्यक है कि वैदिक प्रचार और प्रसार के लिये वेद में विज्ञान के नये आविष्कार खोजे जायें, वैदिक अध्यात्मवाद और ''मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे'' की वैदिक भ्रातृभाव की भावना को फैलाया जाये तो आधुनिक सम्प्रदायवाद पर आधारित आतंकवाद का युक्तियुक्त सशक्त समाधान भी होगा और निश्चित रूप से आज का नवयुवक और नई पीढ़ी वेद तथा आर्यसमाज की ओर आकर्षित होगी और वेद का 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उद्‌घोष सार्थक होगा। आज के विज्ञान के युग में विश्व को भारत की प्राचीनतम अस्मिता का परिचय वेद के नाम/आधार पर ऋषि दयानन्द ही दे सकता है। विज्ञान, धर्म और अध्यात्म का समन्वय केवल वेद में ही अन्तर्निहित है जिसके आधुनिक युग के पुरोधा ऋषि दयानन्द हैं।

–ए-3/11, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063, मो. 9811960640

टंकारा बोधोत्सव पर होने वाली प्रतियोगिताओं हेतु निमन्त्रण

आगामी ऋषि बोधोत्सव 2018 के उपलक्ष्य में टंकारा ट्रस्ट की ओर से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। जिसमें भाग लेकर युवाशक्ति अपनी प्रतिभा उजागर करें.....

वॉलीबॉल (शूटिंग) टूर्नामेन्ट: (सौराष्ट्र प्रदेश के युवाओं के लिए)

❏ प्रवेश पत्र दिनांक 01 फरवरी 2018 तक स्वीकृत होंगे। ❏ यह टूर्नामेन्ट 08 से 10 फरवरी, 2018 के बीच में टंकारा ट्रस्ट के परिसर में होगी। ❏ विजेता टीम को शील्ड प्रदान की जाएगी। ❏ खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया जायेगा।

प्रश्नमंच प्रतियोगिता (सौराष्ट्र प्रदेश की शिक्षा संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिए)

❏ कक्षा 7 से 9 तक के छात्र भाग ले सकते हैं। ❏ आर्यसमाज, वैदिक धर्म के सिद्धान्त और सामान्य ज्ञान पर प्रश्न पूछे जायेंगे। ❏ भाग लेने के इच्छुक विद्यालय के प्राचार्य अपने विद्यार्थियों के नाम 05 फरवरी 2018 तक संयोजक को पहुंचा दे। ❏ प्रथम सिलेक्शन राउन्ड (लिखित) दिनांक 12 फरवरी 2018 को प्रात: 10.00 बजे टंकारा ट्रस्ट परिसर में होगा। जिसमें प्रथम 14 स्थान प्राप्त करने वालों का अन्तिम राउन्ड (मौखिक) उसी दिन दोपहर 2.00 बजे ट्रस्ट परिसर में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव में मुख्य मंच पर होगा। ❏ संदर्भ के लिए महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र और प्रारंभिक शिक्षा पुस्तकों का सहारा ले सकते हैं।

प्रारंभिक शिक्षा पुस्तक लेखक स्वामी शान्तानन्द सरस्वती भवानीपुर कच्छ

(उपरोक्त संदर्भ साहित्य निकटवर्ती आर्यसमाज से प्राप्त किया जा सकता है)

❏ प्रथम तीन विजेताओं को नगद पुरस्कार क्रमश: 500, 300, 200 प्रदान किया जायेगा, अन्यों को सांत्वना पुरस्कार दिया जायेगा। ❏ प्रत्येक को प्रमाण पत्र दिया जायेगा। ❏ बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने जाने का बस किराया दिया जायेगा। ❏ भोजन-आवास की सुविधा नि:शुल्क ट्रस्ट की ओर से मिलेगी।

डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

यह प्रतियोगिता भारत के सभी गुरुकुलों के विद्यार्थियों के लिए होगी।

अत: समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रति वर्ष ऋषि बोधोत्सव पर डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार उस विद्यार्थी को दिया जाता है जिसको योग दर्शन के समस्त 195 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व ऋषि दयानन्द निर्दिष्ट अर्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगित में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने नाम अपने गुरुकुल में प्राचार्य के माध्यम से प्रमाणित किये हुए अपने फोटो सहित प्रतियोगिता संयोजक के पास भेज दे। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को पांच हजार रूपये नगद व स्मृति चिन्ह से पुरस्कृत किया जायेगा।

❏ भाग लेने के लिए गुरुकुल के प्राचार्य अपने छात्रों के नाम फोटो सहित दिनांक 01 फरवरी 2018 तक पहुंचा देवे। ❏ यह प्रतियोगिता ऋषि बोधोत्सव पर दिनांक 12.02.2018 दोपहर 2.00 से 5.00 के सत्र में होगी। ❏ एक गुरुकुल से अधिकतम दो विद्यार्थी भाग ले सकेंगे। ❏ बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने-जाने का साधारण किराया दिया जायेगा। ❏ भोजन-आवास की सुविधा टंकारा ट्रस्ट की ओर से नि:शुल्क होगी। ❏ अधिक जानकारी व नाम भेजने के लिए प्रतियोगिता संयोजक से सम्पर्क करें।

आचार्य रामदेव
(प्राचार्य), मो.9913251448

हसमुख परमार
ट्रस्टी/प्रतियोगिता संयोजक, मो. 9879333348

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

पो. टंकारा, पिन-363650, जिला-मोरबी (गुजरात)

वैदिक संस्कृति में ब्रह्मचर्य

❑ मृदुला अग्रवाल

वैदिक संस्कृति की एक अपूर्व देन है, ''ब्रह्मचर्य''। विश्व की किसी भी संस्कृति ने 'ब्रह्मचर्य' को इतना महत्व नहीं दिया जितना कि भारतीय संस्कृति ने दिया। ''ब्रह्म'' अर्थात् ''परमेश्वर'', ''चर्य'' अर्थात् रमण करना या विचरण करना। परमेश्वर में विचरण करना ही ब्रह्मचर्य कहलाता है। अर्थात् परमेश्वर का चिन्तन, मनन और ध्यान करना ही ब्रह्म में विचरण करना कहलाता है। ब्रह्मचर्य रूपी 'तप' से मन एवं भौतिक इन्द्रियों को संयम में रक्खा जा सकता है। 'तप' अर्थात् अपने कर्त्तव्य-कर्म में सावधानी बर्तना। ब्रह्मचर्य यौन-सम्बन्धी अर्थात् उपस्थ एवं जननेन्द्रिय का संयम है जो कि मनुष्य का शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास करता है। 'ब्रह्म' अर्थात् 'परमेश्वर' ही ब्रह्मचारी को बल का सामर्थ्य, ब्रह्मज्ञानी का प्रताप एवं दीर्घायु प्रदान करता है तथा स्वस्थ, बुद्धिमान और यशस्वी भी बनाता है। पतंजलि मुनि ने 'योगदर्शन' पाद 2, सूत्र 38 में कहा है:- ''ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः'', अर्थात् ब्रह्मचर्य (वेदों के विचार और जितेन्द्रियता) के अभ्यास में 'वीर्य' (वीरता अर्थात् धैर्य, शरीर, इन्द्रिय और मन के सामर्थ्य) को लाभ होता है।

वेदों में ''ओ३म्' पद का सबसे बड़ा सुख व सहारा है। सारे वेद इसी पद को परमात्म-प्राप्ति का साधन बतलाते है। ''ब्रह्मचर्य-पालन'' इसकी प्राप्ति का सबसे अच्छा साधन है, जिससे अक्षय आनन्द की प्राप्ति होती है। ''ब्रह्म'' का दूसरा नाम ''ज्ञान'' है। ''ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः'', ज्ञान के बिना मुक्ति सम्भव नहीं। ज्ञान से परिष्कृत बुद्धि ही मनुष्य को संसार की अनित्यता एवं आत्मा की नित्यता का बोध कराती है। बुद्धि को विमल बनाने के लिए वेद-विद्या कराती है। बुद्धि को विमल बनाने के लिए वेद-विद्या का ज्ञान आवश्यक है। ब्रह्मचारी को वेदों का अध्ययन और उसके अनुसार आचरण अवश्य करना चाहिए। ''हे मनुष्यों! आत्मा, मन और शरीर से ब्रह्मचर्य के साथ विद्याओं में नियत होके विद्या और सुशिक्षा का संचय करो। द्वितीय विद्याजन्म को पाकर पूजित होवो, जिस-जिस के साथ अपना जितना सम्बन्ध है उसको जानो।''-यजुर्वेद, अध्याय-26, मन्त्र-15।। आत्मा निराकार एवं मन भौतिक साकार होने के कारण बुद्धि की सहायता के बिना परमात्मा की ओर प्रवृत होना कठिन है। परमात्मा आकाश, वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी से भिन्न अनादि, अनन्त, अनन्त, सबसे महान् होने के कारण अत्यन्त सूक्ष्म एवं एकरस है। 'ब्रह्म' का एक नाम 'महान्' अर्थात् 'बृहत्' भी है। जब मनुष्य को शरीर से आत्मा को भिन्न होने का ज्ञान प्राप्त हो जाता है तब स्वाभाविक जीव सच्चिदानन्द होकर शोक-मोह के बन्धन, जन्म, मरण के बन्धन से छूट जाता है। अथर्ववेद, काण्ड-11, सूक्त-5, मन्त्र-16, के अनुसार जो पूर्ण आयु पाकर शरीर से आत्मा अलग होती है तो उसे ही मृत्यु को पराजित कर मृत्यु को मारना कहते हैं, जो कि ब्रह्मचर्य के तप से ही सम्भव है-मृत्यु पर विजय पाना। 'इन्द्र' जीवात्मा हैं, 'देव' इन्द्रियां हैं। इन्द्र अर्थात् जीवात्मा ब्रह्मचर्य के द्वारा ही इन्द्रियों (देवों) को सुखी बना सकता है। जीवात्मा ज्ञान के सुख से ब्रह्मानन्द की प्राप्ति करता है अर्थात् परमेश्वर को प्राप्त होता है। ब्रह्मचर्य द्वारा ही इन्द्रियों की अकाल मृत्यु नहीं होती, पूर्ण आयु तक शक्तियाँ बनी रहती हैं। आत्मा में अनुचित विषयों के भाव तक भी न उठने देना जीवात्मा का ब्रह्मचर्य ही है। भोगी संसार के भोगों में रमा हुआ भी दुःखी है, परन्तु योगी संसार के भोगों (विषयों) पर विजय पाकर संसार के इतने परिवर्तनों में भी सुखी है। ब्रह्मचारी (योगी) ब्रह्मचर्य के तपोबल से परमात्मा के गुणों को प्रकट करके, विद्वानों को प्रसन्न करके, वेद-विद्या के प्रचार से आचार्य का इष्ट सिद्ध करता है। जो वीर्य-निग्राहक एवं वेदपाठक पुरुष है वह प्राण-अपान (श्वास-प्रश्वास-विद्या) को, व्यान (सर्व शरीर-व्यापक वायु विद्या) को, वाणी (भाषण-विद्या) को, मन (मनन-विद्या) को, हृदय (के ज्ञान) को, ब्रह्म (परमेश्वर-ज्ञान) को, और धारणावती बुद्धि को जानकर सम्पूर्ण उत्तम गुणों से सम्पन्न होकर विद्याओं का प्रकाश करता है और बुद्धि का चमत्कार दिखाता है। '' मनुष्य परमेश्वर को पिता के समान हितकारी जानकर अपने सब व्यवहारों को स्वस्थ रक्खे और ब्रह्मचर्य आदि तप तथा सत्य व्यवहार से ईश्वर ज्ञान में तत्पर रहें।'' अथर्ववेद, काण्ड-12, सूक्त-3, मन्त्र-12।।

जो मनुष्य ब्रह्मचर्य से आप्त विद्वानों के समीप से विद्या, शिक्षा को प्राप्त हुआ ईश्वर के समान उपकार-दृष्टि से प्रशंसा और सत्कार को प्राप्त हुआ प्रतिदिन उत्तम बुद्धि से समस्त शुभ गुण, कर्म और स्वभावों को धारण करता है वह सम्पूर्ण विद्यावान् होता है। -ऋग्वेद, मंडल-2, सूक्त-1, मन्त्र-3।।

स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थ-प्रकाश' में लिखा है कि ब्रह्मचर्य में केवल ब्रह्मयज्ञ और अग्निहोत्र को ही करना होता है। जब तक पूरी विद्या ग्रहण करे तब तक ब्रह्मचर्य को रखना आवश्यक है। विवाह करके भी लम्पटता न करे तो शरीर में प्राण बलवान् होकर सब शुभगुणों का वास रखता है। मनुष्य रोगरहित रहता है। आयु भी दीर्घायु होती है। अखण्ड ब्रह्मचारी अपने तप से सबसे उत्तम चार सौ वर्ष पर्यन्त आयु को बढ़ा सकता है। सब प्रकार के रोगों से रहित धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होता है। यह बड़ा कठिन काम है जो कि काम के वेग को थाम कर इन्द्रियों को अपने वश में रखना। स्वामी दयानन्द से किसी ने पूछा कि ''आपको वासना नहीं सताती क्या?'' उन्होंने उत्तर दिया कि ''मैं स्वयं को किसी न किसी काम में व्यस्त रखता हूँ शायद इसलिए मुझे विषय-वासना नहीं सताती।'' जो मनुष्य ज्ञान के चिन्तन में, वेदों के अध्ययन में, परमेश्वर-प्राप्ति की चेष्टा में संलग्न रहता है वह विषयचारी कैसे हो सकता है।

''स्त्री-पुरुष युवा होकर अविवाहित ही रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करें तो गृहस्थाश्रम में प्रवेश बहुत सुन्दर होता है। ब्रह्मचर्य की महिमा इतनी है कि बैल ब्रह्मचर्य के बिना शकट को नहीं खींच सकता, घोड़ा बिना ब्रह्मचर्य के शत्रु पर विजय नहीं पा सकता। जब पशुओं में ब्रह्मचर्य की इतनी महिमा है तो मनुष्य को तो अपने जीवन में लाना ही चाहिए।-अथर्ववेद, काण्ड-11, सूक्त-75, मन्त्र-18।। ब्रह्मचर्य-धर्म से शरीर की पुष्टि, मन की संतुष्टि और विद्या की वृद्धि प्राप्त कर, विवाहित स्त्री-पुरुष यत्न के साथ उत्तम संतान धारण करें।-यजुर्वेद, अध्याय-8, मन्त्र-28।। जो माता-पिता अपने पुत्रों और कन्याओं को ब्रह्मचर्य के साथ वेद-विद्या और उत्तम शिक्षा से युक्त कर शरीर और आत्मा को बलवाले करें तो उन संतानों के लिए अत्यन्त हितकारी हो।

मनुस्मृति, अध्याय-2, श्लोक-140 में आचार्य के लक्षण इस प्रकार लिखें हैं:- जो द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) शिष्य का उपनयन करके कल्प (यज्ञ आदि संस्कार विधि) और रहस्य (उपनिषद् आदि

ब्रह्मविद्या) के साथ वेद पढ़ावे, उसको ''आचार्य'' कहते हैं। उपनयन संस्कार में आचार्य ब्रह्मचारी शिष्य को सदाचारी, ज्ञानी एवं बुद्धिमान बनाता है जो कि शिक्षा के तीन मुख्य अंग हैं। शिष्य अपने आचार्य की देख-रेख में रहता है। भौतिक सुखों को त्यागकर वह ज्ञान पाने की इच्छा से गुरु के पास जाता है। आचार्य व गुरु उसे ब्रह्म के समीप ले जाता है और उसके जीवन को सफल बनाता है। उसे सरलता, पवित्रता और धैर्य सिखाता है। आचार्य जब अपने शिष्य ब्रह्मचारी की इच्छा करे तब उस आचार्य को स्वयं भी ब्रह्मचारी होना चाहिए। उस समय वह गृहस्थ-वृत्ति का न हो, उसे अपने परिवार की फिक्र न हो, अपने विद्यार्थी के निरीक्षण में अपना सारा समय दे सके। गृहस्थाश्रम व्यतीत कर वाणप्रस्थ या संन्यास आश्रम में प्रवेश कर चुका हो ऐसा आचार्य तो और भी अच्छा होता है। जैसी शिक्षा हो वैसा ही उसका जीवन अर्थात् जीवन का क्रियात्मक पहलू भी ब्रह्मचारी शिष्य के सामने प्रस्तुत कर सकता है। माता जिस प्रकार अपने उदरस्थ गर्भ की रक्षा करती है, उसी प्रकार आचार्य भी इस शिष्य पुत्र की रक्षा करे। आचार्य उस ब्रह्मचारी जब तक ब्रह्मचर्य आश्रम में है, तब तक मानो वह रात्रिकाल में है, क्योंकि अभी तक उसके हृदय में विद्यासूर्य का पूर्ण प्रकाश नहीं हुआ। तीन रात आचार्य के उदर में शयन करता है अर्थात् आचार्य की पूर्ण सुरक्षा में रहता है। आचार्य उसके उत्तम गुणों की परीक्षा लेता है। जब आचार्य की शरण से बाहर संसार में आता है अर्थात् पैदा होता है, तब ऐसे ''आदित्य-ब्रह्मचारी'' (सूर्यसम प्रकाशमान तथा तेजस्वी) को विद्वान एवं गुणीजन मान-सम्मान देते हैं और इस नवोत्पन्न के दर्शन के लिए टोली बाँधकार आते हैं-''तं जातं इस नवोत्पन्न के दर्शन के लिए टोली बाँधकार आते हैं-''तं जातं द्रष्टुममिसंयन्तिू देवाः''-अथर्ववेद, काण्ड-11, सूक्त-5, मन्त्र-3।। ब्रह्मचारी को उसके नये जीवन में सुख-सामग्री दिलाना आचाय्र का काम होता है। ब्रह्मचारी हवन में तीन समिधायें छोड़कर, मेखला से कटिबद्ध होकर, परिश्रम से, इन्द्रिय दमन रूपी तप से, समुद्र के समान गंभीर ब्रह्मचर्य के साथ, पृथिवी, सूर्य एवं अन्तरिक्ष विद्या को जानकर, विद्यारूप, जल में स्नान करके आचार्य की संतुष्टि से स्नातक होकर और समावर्तन करके संसार का उपकार करते हुए, ऋषियों के समान सारे शुभकार्य करते हुए कीर्तिमान व यशस्वी होता है। ब्रह्मचारी में सम्पूर्ण दिव्य गुण विद्यमान रहते हैं। वह अपना सम्पूर्ण ज्ञान एवं उत्तम शिक्षा को सबमें (विद्वानों) दानकर ऐश्वर्यवान तथा प्रतिष्ठित होता है। संसार में जितना भी ज्ञान है उसका आदि स्रोत 'ब्रह्मम्' व 'परमेश्वर' ही है। परमेश्वर के नियम से सब प्राणी शरीर धारण करके ब्रह्मचर्य के पालन से उन्नति करते हैं। इसी प्रकार 'समलैंगिक व्यक्ति'' भी ब्रह्मचर्य तप से स्वयं को स्वस्थ रख सकते हैं। ''समलैंगिकता'' एक प्रकार का यौन-सम्बन्धी रोग है जिसे ब्रह्मचर्य से शीत-उष्ण आदि के द्वन्द्व को सहन करके, आलस्य को त्यागकर, ब्रह्मज्ञान को प्रापत कर, तप से, योगाभ्यास से, सन्मार्ग-दर्शन से, सूर्य-समान प्रकाश करके, सबके हितकारी होकर, श्रवण-मनन एवं निदिध्यासन से प्रतिबन्धित किया जा सकता है। (श्री खुशहाल चन्द्र जी आर्य ने अपने ग्रन्थ ''खुशहाल-लेखावली'' में इस प्रसंग को विस्तार में लिखा है) आज फिर विरजानन्द जैसे गुरु व आचार्य तथा महर्षि दयानन्द जैसे पूर्ण ब्रह्मचारी शिष्य की आवश्यकता है। आचार्य के ज्ञानरूपी प्रकाश से राष्ट्र चमक उठता है। ब्रह्मचारी शिष्य में भी सद्गुणों का विकास होता है।

- 16 सी सरत बोस रोड, कोलकाता-700020, मो. 9836841051

एयर इण्डिया हवाई जहाज से
दिल्ली से राजकोट/टंकारा सीधे डेढ़ घंटे में

टंकारा के ऋषि भक्तों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि अब दिल्ली से राजकोट के लिए एयर इण्डिया की सीधा फ्लाईट्स आरम्भ हो गई है। ऋषि भक्तों के लिए सुविधाजनक रहेगा। ऋषि भक्तो के सुविधा हेतु 11 फरवरी 2018 रविवार सायं 5.05 बजे एयर इण्डिया फ्लाईट न. 495 राजकोट के लिए जायेगी। राजकोट से टंकारा मात्र 40 किलोमीटर की दूरी पर है। इसी तरह राजकोट से दिल्ली के लिए बुधवार सायं 7.30 बजे एयर इण्डिया फ्लाईट न. 496, टंकारा जाने वाले ऋषि भक्त इसका लाभ उठा सकते हैं।

टंकारा समाचार
पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 20 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)** **-प्रबन्धक**

अप्प दीपो भव अर्थात् जलकर दूसरों तक प्रकाश पहुँचाओ

❒ सीताराम गुप्ता

कहा जाता है अप्प दीपो भव। अपना प्रकाश स्वयं बनो। अत्यंत प्रेरक संबोधन है यह। ठीक है। आप में ऊर्जा है, उत्साह है। कौन रोक सकता है आपको अपना प्रकाश बनने से, अपना स्वयं का विकास करने से? करना भी चाहिए। जो अपनी मदद खुद करते हैं दूसरे भी उन्हीं की मदद करते हैं। लेकिन एक बात है। एक खूबसूरत दीपक है स्नेह (तेल) से लबालब भरा हुआ। उसमें एक अत्यंत पुष्ट वर्तिका भी लगी है।

लेकिन इतना सब होते हुए भी दूसरों को प्रकाशित करना तो दूर वह स्वयं भी प्रकाशित नहीं है। वह तब तक न तो दूसरों को प्रकाश दे सकता है और न स्वयं ही प्रकाशित हो सकता है जब तक कि अन्य कोई दीपक उसे प्रज्वलित नहीं करता, उसे अपना प्रकाश नहीं दे देता। अर्थात् हमें अपना प्रकाश स्वयं बनने के लिए सबसे बाह्य प्रकाश की आवश्यकता पड़ती ही है। हम स्वयं के अनुभवों से जीवन में सीखते ही कितना हैं? जिन्हें हम अपने अनुभव कहते हैं वो वास्तव में हमारे संपूर्ण परिवेश के समग्र अनुभव ही तो होते हैं।

दीपक चाहे स्वयं प्रकाश बन जाए लेकिन एक दीपक भी स्वयं नहीं बनता। उसको भी एक कुम्हार बड़े यत्न से निर्मित करता है। मिट्टी को कूटता-पीटता है, बारीक करके छानता है, उसे भिगोता है। फिर उसे आकर देता है। आकार देने के बाद उसे चाक से उतारने में भी उसका कम कौशल नहीं होता? अत्यंत मृदुता से उसे चाक से उतारता है। यदि यहाँ पर जरा सी चूक हो जाए तो आकार ही बिगड़ जाए बेचारे दीपक का। फिर सूखने के लिए रखता है। सुखाने के बाद रंगता भी है उसे और अंत में पकाता है। तब कहीं जाकर तैयार होता है एक लघु आकार का पात्र जिसे दीपक बनना होता है।

पात्र दीपक नहीं होता। पात्र को दीपक बनने के लिए स्नेह की आवश्यकता होती है। स्नेह यानी ऊर्जा। तैल अथवा घृत। किसान दिन-रात खेत में मेहनत करके तिलहन का उत्पादन करता है। फिर उसमें से तेल निकाला जाता है। कोल्हू के बैल की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है तेल निकालने के लिए। वैसे किसान का पूरा परिवार ही कोल्हू के बैल की तरह लगा रहता है तब कहीं जाकर पात्र को स्नेह अथवा तेल से पूरित कर दीपक बनाना संभव हो पाता है।

स्नेह के उपरांत वर्तिका भी जरूरी है। वर्तिका के लिए रूई की जरूरत पड़ती है। वह भी किसान कर्म से ही प्राप्त होती है। किसान बीज बोता है। पौधों की देखभाल करता है, उनमें पानी देता है। पौधों पर फूल खिलते हैं। यही कपास है। वह कपास चुनता है। कपास को ओंटा जाता है अर्थात् उसमें से बीज अलग किये जाते हैं। बीज अर्थात् बिनौले अलग होने के बाद जो रेशा बचता है वही रूई है। रूई को धुना जाता है। उसके रेशे हमवार किए जाते हैं। इसी कोमल रूई से बनती है वर्तिका या बाती। पात्र में वर्तिका लगाकर इसे स्नेह से भर दिया जाता है इसे दीपक बनाने के लिए। लेकिन फिर भी यह प्रकाश का स्रोत नहीं बन पाता। न खुद ही प्रकाशित होता है और न दूसरों को ही प्रकाशित कर पाता है। यह तो दूसरा कोई प्रज्वलित दीपक ही है जो अपनी लौ से इसे भी प्रज्वलित कर जाता है।

अप्प दीपो भव। अपना प्रकाश स्वयं बनो। लेकिन प्रकाश से पूर्व एक स्थूल दीपक बनना भी जरूरी है। स्थूल दीपक भी बन गए तो कोई न कोई प्रज्वलित दीपक हमसे आ मिलेगा और हमें भी प्रकाशित करके ही जाएगा। और हम तो ऐसे दीपक हैं जो प्रकाश लेने के लिए दूसरे दीपक के पास जाने में भी परहेज करते हैं। संकोच के कारण या अहंकार के वशीभूत होकर। हमारे संकोच, हमारी विवशता व अन्य सीमाओं को देखकर दूसरे कई दीपक स्वयं हमारे पास आ पहुँचते हैं हमें प्रकाशित करने ताकि हम स्वयं भी प्रकाशित हो सकें और दूसरों को भी प्रकाश दे सकें। और इसका आभास भी नहीं होने देते कि उन्होंने हमें प्रकाशित किया है।

फिर भी कहते हो अपना प्रकाश स्वयं बनो। कुछ कहते हैं अप्प दीपो भव। अपना प्रकाश स्वयं बनो। नहीं। ये कहना अधिक उचित प्रतीत होता है कि स्वयं को दीपक बनाओ। यदि हम स्वयं दूसरे दीपकों से प्रकाश लेकर अपने आप को रोशन करने की दिशा में अग्रसर हो सकें तो यह बड़ी बात होगी, बहुत बड़ी बात। स्वयं जल कर ही दूसरों तक प्रकाश सकेंगे। दीपक की सार्थकता भी इसी में है। वह स्वयं नहीं बन सकता लेकिन दूसरों के बनाने पर जरूर कुछ कर सकता है। वह स्वयं नहीं जल सकता लेकिन दूसरों के जलाने पर जरूर स्वयं प्रकाशित होकर दूसरों को भी प्रकाशित कर सकता है, उन्हें अंधेरे से बचा सकता है, उनका अज्ञान दूर कर सकता है। इसी में निहित है संस्कृति की शाश्वतता भी।

- ए.डी.106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन- न. 09555622323

टंकारा बोधोत्सव 2018

हर्ष का विषय है कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन सोमवार, मंगलवार, बुधवार 12, 13, 14 फरवरी 2018 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियां अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास (आने की पूर्व सूचना देने पर) एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

निवेदक-रामनाथ सहगल, ट्रस्ट मन्त्री

हरियाणा सरकार द्वारा पं. जगदीश चन्द्र 'वसु' जी को हिन्दी रक्षा आन्दोलन 1957 के स्वतन्त्रता सेनानी की उपाधि से अलंकृत

आर्य जगत् के वैदिक विद्वान् वेदोपदेशक पं. जगदीश चन्द्र ''वसु'' को सन् 1957 के आर्य समाज के द्वारा संचालित ''हिन्दी रक्षा आन्दोलन'' के अन्तर्गत कारागार भोगने तथा मातृभाषा हिन्दी की रक्षा के लिए अनेक यातनाएँ सहन करने के कारण हरियाणा सरकार द्वारा उन्हें स्वतन्त्रता सेनानी घोषित करके 15 अगस्त, 2017 को पानीपत के आर्य पी.जी. कॉलेज के विशाल प्रांगण में स्वतन्त्रता दिवस के महान अवसर पर ''स्वतन्त्रता-सेनानी'' की गौरव उपाधि से मान्य श्री कर्णदेव कम्बोज, खाद्यमन्त्री, हरियाणा द्वारा अलंकृत कर सम्मानित किया गया।

पं. जगदीश चन्द्र वसु का जन्म पं. ब्रह्मानन्द शर्मा तथा पूज्या चन्दा देवी शर्मा के घर 8 अगस्त 1938 में ग्राम कुरली, जिला बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश में हुआ। आपके जीवन में बचपन से ही अपने देश के प्रति आस्था तथा भक्ति थी। आपने अपना सम्पूर्ण जीवन वेद प्रचार, आर्य समाज तथा महर्षि देव दयानन्द के सिद्धान्तों-मान्यताओं के प्रचार-प्रसार में समर्पित कर दिया। आप एक उच्च कोटि के विद्वान, उपदेशक, वैदिक प्रवक्ता तथा लेखक हैं। आप सन् 1959 से निरन्तर प्रचार तथा लेखन कार्य में रत हैं।

आप सार्वदेशिक आर्य वीर दल, नई दिल्ली के प्रधान शिक्षक रहें। आपने हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश आदि में असंख्य युवाओं को आर्य समाज से जोड़ा। आपने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के गठन में पूर्ण सहयोग दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, पंजाब एवं महाराष्ट्र में महोपदेशक के पद पर रहते हुए प्रचार कार्य किया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली एवं उपसभा हरियाणा में सहायता तथा वेद प्रचार अधिष्ठाता के पद पर 25 वर्ष तक प्रचार कार्य किया। हिन्दी रक्षा आन्दोलन 1957 में एवं सन् 1967 में गौरक्षा आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेकर तीन बार कारावास की सजा काटी और यातनाएं सही। परन्तु मातृभाषा हिन्दी तथा गौ माता का अपमान नहीं होने दिया।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन में हिन्दी भाषा की रक्षा हेतु आपको हरियाणा सरकार की ओर से लघु सचिवालय में 29 सितम्बर 2017, शुक्रवार को राज्य शिक्षा मन्त्री माननीय श्री अनिल विज जी ने स्मृति चिन्ह, शाल एवं पुस्तिका आदि भेंट कर सम्मानित किया। पत्रकार बन्धुओं ने अपने समाचार पत्रों में इस समाचार को स्थान देकर न केवल आपका ही सम्मान किया अपितु भारत के उन लाखों-करोड़ों राष्ट्र भक्तों तथा शहीदों का भी सम्मान किया जिन्होंने राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। पं. जगदीश चन्द्र ''वसु'' जी ने लगभग 30 पुस्तकों का लेखन करके वैदिक साहित्य की समाज सुधारक का निर्वाह करके आर्यत्व का परिचय दिया है। आपकी शिक्षा-दीक्षा निम्ननिलिखित स्थानों पर हुई- (1) चण्डी संस्कृत महाविद्यालय, हापुड़, उत्तर प्रदेश (2) सर्वदानन्द साधू आश्रम संस्कृत महाविद्यालय, हरदुआगंज, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश। (3)श्री दयानन्द उपदेश महाविद्यालय यमुना नगर, हरियाणा (4) दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार, हरियाणा के आप योग्य स्नातक हैं।

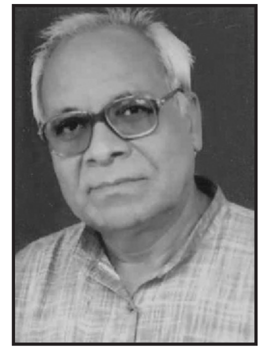

मान्य श्री वसु जी हिन्दी आन्दोलन के साथ-साथ समाज के सजग प्रहरी, प्रबुद्ध विद्वान हैं और समाज में दायरा विकसित किए हुए जाना-माना चेहरा और जन संघ से जुड़े पुराने व्यक्तित्व के धनी हैं। आपको भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री मान्य श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं मुम्बई, महाराष्ट्र के पूर्व पुलिस कमिशनर तथा वर्तमान में केन्द्रीय राज्य मन्त्री श्री डॉ. सत्यपाल सिंह जी आर्य द्वारा तथा अन्यत्र 27 बार सम्मानित किया जा चुका है। आपने अपने अथक परिश्रम से पानीपत में 7 फरवरी सन् 1987 को आर्य समाज देसराज कॉलोनी की स्थापना की जहां आपके नेतृत्व में 30 वर्षो से वाषिकोत्सव एवं वेद प्रचार सप्ताह विशेष पर्व आदि उत्साहपूर्वक मनाए जाते हैं।

– आचार्य राजकुमार शर्मा, वैदिक प्रवक्ता, पानीपत, मो. 9416333226

जीवन को जानो

❑ **ओमप्रकाश अग्रवाल**

- ❑ इंसान का जीवन मिलना एक सुनहरापन होता है।
- ❑ समय ही सम्पत्ति है इसका सदुपयोग करो।
- ❑ आप नेकी-वदी कोई भी रास्ता चुन सकते हैं जहां जाना हो वहां की टिकट ले सकते हैं।
- ❑ अगर आपका बैलेंस होगा तो ही आपका चैक पास होगा।
- ❑ सरल जीवन पद्धति अपनाओ सादगी रखो जो संसार में सदाबहार रहती है।
- ❑ जरूरत को इतना मत बढ़ाओ कि सही रास्ता ही भूल जाओ।
- ❑ सत्य बोलो, सत्य भी मीठा बोलो, कम से कम बोलो।
- ❑ कोई क्या करता है उसे मत देखो, जो तुम करते हो उस पर विचार करो, तुम संसार को चला नहीं सकते, खुद चल सकते हो।
- ❑ अच्छी मौत के लिए अच्छी राह अपनाओ ताकि मौत से डर ना लगे।
- ❑ इंसान बन कर ही कर्म होता है इसलिए कर्म को ही प्रधानता दो बाकि जन्म सिर्फ भोग लिए होते हैं।
- ❑ बदले की भावना त्याग दो, क्षमा करो, समझौता करो।
- ❑ बेदाग जिन्दगी जीओ, एक बार दाग लग जाए तो वो जाता नहीं यह ध्यान रखना।
- ❑ आज को सुखी रखो कल का क्या भरोसा, काम को नोट करो, काम का निपटारा करो, तरक्की सामने होगी।
- ❑ सरकारी देनदानी बहुत बुरी होती है।
- ❑ झूठ बोलने के लिए सोचना पड़ता है, सच हमेशा याद रहता है।

– 219, आवास विकास कॉलोनी, ऋषिकेष, उत्तरांचल

સામ્રાજ્ઞી ભવ સ્વપ્ન - ઋષિ દયાનન્દનું

'રામેન્દુ'

મહર્ષિ દયાનન્દજી પોતાના કાલજયી ગ્રન્થ સત્યાર્થપ્રકાશના ૩ જા સમ્મુલ્લાસમાં લખે છે –

"પ્રશ્ન - શું સ્ત્રી અને શૂદ્ર પણ વેદ ભણે? જો એ ભણશે તો પછી અમે શું કરીશું? અને એમને ભણાવવામાં પ્રમાણ પણ નથી. જુઓ આ નિષેધ છે - *સ્ત્રીશૂદ્રૌ નાધીયતામિતિ શ્રુતેઃ* - સ્ત્રી અને શૂદ્ર ન ભણે એ શ્રુતિ છે.

ઉત્તર – બધાં સ્ત્રી અને પુરુષને અર્થાત્ મનુષ્યમાત્રને ભણવાનો અધિકાર છે. તમે કૂવામાં પડો અને આ શ્રુતિ તમારી કપોલ-કલ્પનાથી બની છે, તે કોઈ પ્રામાણિક ગ્રન્થની નથી. સર્વ મનુષ્યોને વેદાદિ શાસ્ત્રો ભણવા અને શ્રવણ કરવાનો અધિકાર છે. તેના પ્રમાણમાં યજુર્વેદના છવ્વીસમાં અધ્યાયનો બીજો મન્ત્ર છે :-

યથેમાં વાચં કલ્યાણીમાવદાનિ જનેભ્યઃ।

બ્રહ્મરાજન્યાભ્યાં શૂદ્રાય ચાર્યાય ચ સ્વાય ચારણાય

પરમેશ્વર કહે છે યથા જેમ હું *જનેભ્યઃ* સર્વ મનુષ્ય માટે *ઇમામ્* આ *કલ્યાણીમ્* કલ્યાણ અર્થાત્ સંસાર અને મુક્તિનું સુખ આપનારી *વાચમ્* ઋગ્વેદાદિ ચારે વેદની વાણીનો *આવદાનિ* ઉપદેશ કરું છું.

અહીં કોઈ એવો પ્રશ્ન કરે કે *જન* શબ્દથી દ્વિજોનું ગ્રહણ કરવું જોઈએ, કેમકે સ્મૃત્યાદિ ગ્રન્થોમાં બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય અને વૈશ્યને જ વેદો ભણવાનો અધિકાર લખ્યો છે, સ્ત્રી અને શૂદ્રાદિ વર્ણોને નહીં.

ઉત્તર :- *બ્રહ્મરાજન્યાભ્યામ્* ઇત્યાદિ જુઓ, પરમાત્મા સ્વયં કહે છે કે મેં બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય *આર્યાય* વૈશ્ય *શૂદ્રાય* અને *સ્વાય* પોતાના ભૃત્ય કે સ્ત્રી આદિ *અરણાય* અને અતિશૂદ્રાદિને માટે પણ વેદોનો પ્રકાશ કર્યો છે. અર્થાત્ સર્વ મનુષ્ય વેદોને ભણી-ભણાવી, સાંભળી-સંભળાવીને, વિજ્ઞાન વધારી સારી વાતોનું ગ્રહણ અને નઠારી વાતોનો ત્યાગ કરી, દુઃખોથી છૂટી, આનન્દને પ્રાપ્ત થાઓ. હવે કહો તમારી વાત માનીએ કે પરમાત્માની? પરમેશ્વરની વાત અવશ્ય માનનીય છે, તમારી નહીં. આમ હોવા છતાં પણજો કોઈ માનશે નહીં તો નાસ્તિક કહેવાશે. કેમ કે *નાસ્તિકો વેદનિન્દકઃ* વેદોનો નિંદક અને વેદોને નહીં માનનાર નાસ્તિક કહેવાય છે.

.... અને જે સ્ત્રીઓને ભણાવવાનો નિષેધ કરો છો, તે તમારી મૂર્ખતા, સ્વાર્થતા અને નિર્બુદ્ધિતાનો પ્રભાવ છે. જુઓ, વેદમાં કન્યાઓને ભણાવવાનું પ્રમાણ :

"બ્રહ્મચર્યેણ કન્યાઉ યુવાનં વિન્દતે પતિમ્।।

અથર્વ. અનુ. ૩ પ્ર. ૨૪. કાં. ૧૧, અ. ૩, મં. ૧૮

જેમ બાળકો બ્રહ્મચર્ય સેવનથી પૂર્ણ વિદ્યા અને સુશિક્ષાને પ્રાપ્ત થઈ યુવતી, વિદુષી, પોતાને અનુકૂળ, પ્રિય, સદેશ સ્ત્રીની સાથે વિવાહ કરે છે, તેમ *કન્યા* કુમારી *બ્રહ્મચર્યેણ* બ્રહ્મચર્ય-સેવનથી વેદાદિ શાસ્ત્રોને ભણી પૂર્ણ વિદ્યા અને ઉત્તમ શિક્ષાને પ્રાપ્ત યુવતી થઈ પૂર્ણ યુવાવસ્થામાં પોતાને સદેશ પ્રિય વિદ્વાન્ *યુવાનમ્* અને પૂર્ણ યુવાવસ્થાવાળા પુરુષને *વિન્દતે* પ્રાપ્ત થાય, એથી સ્ત્રીઓએ પણ બ્રહ્મચર્ય અને વિદ્યાનું ગ્રહણ અવશ્ય કરવું જોઈએ.

પ્રશ્ન :- શું સ્ત્રીઓ પણ વેદો ભણે?

ઉત્તર :- અવશ્ય, જુઓ શ્રૌતસૂત્રાદિમાં *–ઇમં મન્ત્રમ્ પત્ની પઠેત્* – અર્થાત્ સ્ત્રી યજ્ઞમાં આ મન્ત્ર ભણે. જો વેદાદિ શાસ્ત્રોને ન ભણી હોય તો યજ્ઞમાં સ્વર સહિત મન્ત્રોનું ઉચ્ચારણ અને સંસ્કૃતભાષણ કેવી રીતે કરી શકે? ભારતવર્ષની સ્ત્રીઓમાં ભૂષણરુપ ગાર્ગી આદિ વેદાદિ શાસ્ત્રો ભણી પૂર્ણ વિદુષી થઈ હતી. એ શતપથબ્રાહ્મણમાં સ્પષ્ટ લખ્યું છે. જો પુરુષ વિદ્વાન્ હોય અને સ્ત્રી અવિદુષી અને સ્ત્રિ વિદુષી હોય અને પુરુષ અવિદ્વાન્ હોય, તો નિત્યપ્રતિ દેવાસુર સંગ્રામ ઘરમાં મચ્યો રહે, તો પછી સુખ કયાં? એટલા માટે જો સ્ત્રી ન ભણે, તો કન્યાઓની પાઠશાળાઓમાં અધ્યાપિકા કેવી રીતે બની શકે? તથા રાજકાર્ય, ન્યાયાધીશત્વાદિ, ગૃહાશ્રમનાં કાર્ય – જેમ કે પતિને સ્ત્રીએ અને સ્ત્રીને પતિએ પ્રસન્ન રાખવો, ઘરનાં સર્વ કાર્ય સ્ત્રીને આધીન રહેવા વિગેરે કામ વિદ્યા વિના ઉત્તમ પ્રકારે કદી પણ ઠીક ઠીક થઈ શકતા નથી.

જુઓ, આર્યાવર્ત્તના રાજપુરુષોની સ્ત્રીઓ ધનુર્વેદ અર્થાત્ યુદ્ધવિદ્યા પણ સારી પ્રકારે જાણતી હતી. કેમ કે જો ન જાણતી હોત તો કૈકેયી આદિ દશરથ આદિની સાથે યુદ્ધમાં કેમ કરી જઈ શકત? એથી બ્રાહ્મણીએ સર્વ વિદ્યા તથા રાજવિદ્યાવિશેષ, વૈશ્યાએ વ્યવહારવિદ્યા અને શૂદ્રાએ પાકાદિ સેવાની વિદ્યા અવશ્ય શીખવી જોઈએ."

મહર્ષિ દયાનન્દે જોયેલું સ્વપ્ન પશ્ચાત્વર્તી આર્યોએ પુરુષાર્થ પૂર્વક સાકાર કર્યું છે. ગુજરાતમાં પણ પં. આનન્દ પ્રિયજીએ વડોદરામાં આર્ય કન્યા મહાવિદ્યાલયની સ્થાપના કરીને સંસારને અનેક વિદુષી સન્નારીઓની ભેટ આપી છે. તાજેતરમાં જ જેમનું અવસાન થયું તે અનિલાદેવી આર્ય આમ તો પં. જ્ઞાનેન્દ્ર સિદ્ધાન્તભૂષણના પત્ની તરીકે પ્રસિદ્ધ હતા. પણ તેઓ વડોદરા ગુરુકુલના સ્નાતિકા હતા અને મુમ્બઈમાં ધનાઢ્ય પરિવારોમાં મહિલાઓને સંસ્કૃત ભણાવવા જતા તો સાથે સાથે મુમ્બઈની આર્યસમાજોમાં તેમના પ્રવચનો પણ યોજાતા.

એકવાર અમદાવાદમાં પુસ્તકમેળામાં આર્યસમાજના સ્ટોલ પર બેઠો હતો. એક બહેને આવીને ઋગ્વેદ સંહિતા હાથમાં લઈ જોવા લાગ્યા. મેં કહ્યું કે આતો માત્ર સંસ્કૃતમાં છે, હું તમને એનો હિન્દી અનુવાદ બતાવું. તો કહે કે મને સંસ્કૃત આવડે છે. મને આશ્ચર્ય થયું, નામ પુછતા જવાબ મળ્યો કે તેમનું નામ નિર્મળાબેન હતું.

બહું ઓછા લોકો જાણે છે પોરબંદરના શેઠ નાનજી કાલિદાસ મહેતાને બે પુત્રીઓ હતી. લોકો તો માત્ર સવિતા બહેનને જ જાણે છે. તરત જ મેં કહ્યું કે તમે તો શેઠ નાનજીભાઈના દિકરી છો અને ખટાઉ પરિવારમાં

પરણ્યા છો. વડોદરા ગુરુકુલના સ્નાતિકા છો તેમજ મુમ્બઈના પં. વિભુદેવ શાસ્ત્રી પણ તમારે ત્યાં ભણાવવા આવતા.

ઈ. સ. ૧૯૮૯નું વર્ષ અમદાવાદમાં આર્યસમાજના ઇતિહાસમાં એક સીમાચિન્હ બની રહ્યુ છે. સુપ્રસિદ્ધ આર્યશ્રેષ્ઠી પરિવારના શ્રી કિશોર ગોયલે મને કહ્યું કે પાણિની કન્યા મહાવિદ્યાલયની આચાર્ય વિદુષી પ્રજ્ઞાદેવીને અમદાવાદમાં બોલાવીને તેમની પાસે યજુર્વેદ પારાયણ યજ્ઞ કરાવવો છે. મેં વિનંતી કરી કે વેદપાઠ માટે પણ ગુરુકુલની જ બ્રહ્મચારિણીઓને બોલાવો અને સમગ્ર કાર્યક્રમ માત્ર અને માત્ર બહેનો દ્વારા જ થાય એવું ગોઠવો. તેઓ તૈયાર થયા. મને કહે કે જેમ યોગ્ય લાગે તેમ કરો, કાર્યક્રમ દ્વારા આર્યસમાજનો પ્રચાર થવો જોઈએ. કાર્યક્રમ નીચે પ્રમાણે ગોઠવ્યો –

- પારાયણયજ્ઞ શ્રી કિશોર ગોયલજીની જ એક કંપની દ્વારા નિર્માણાધીન વાણિજ્ય ભવનના પરિસરમાં ગોઠવવો
- વર્તમાન-પત્રોમાં વિજ્ઞાપનને બદલે પ્રેસ કૉન્ફરન્સ દ્વારા વ્યાપક પ્રસિદ્ધિ મળે તેવું આયોજન કરવું.
- પારાયણયજ્ઞના આચાર્ય પદે અને વેદપાઠી તરીકે માત્ર બહનો જ રહેશે તે વિષયની પ્રસિદ્ધિ માટે ભાર મૂકવો.

શ્રી કિશોર ગોયલને મારી યોજના કહી, તેમણે કહ્યું કે ખર્ચની ચિંતા ન કરો, કામ યોગ્ય રીતે થવું જોઈએ. પત્રકારોને બોલાવવાથી લઈને પત્રકાર પરિષદનું આયોજન કરવાની જવાબદારી ટંકારામાં જ થોડો સમય રહીને ભણેલા મિત્ર મહેશ આર્યને સોંપી.

શ્રી કિશોરજીએ મને પણ વેદપાઠી તરીકે બેસવાનો આગ્રહ કર્યો, પણ મેં કહ્યું કે જ્યારે હું પોતે જ એ વાતનો વ્યાપક પ્રચાર કરું છું કે યજ્ઞના આચાર્ય અને વેદપાઠી તરીકે માત્ર બહેનો જ રહેશે, ઉપદેશકો અને ભજન ગાવા માટે પણ બહેનો જ રહેશે તો હું પણ વેદપાઠી તરીકે નહીં બેસું. સમગ્ર કાર્યક્રમમાં મંચ ઉપર ક્યાંય કોઈ પુરુષને સ્થાન નથી આપવું. પરિણામે અમદાવાદના કેટલાક વિદ્વાનો અને આર્યસમાજના પદાધિકારીઓ ખૂબ જ નારાજ થયા હતા.

પ્રજ્ઞાદેવીજી અને બ્રહ્મચારિણીઓના આવાસ-નિવાસની વ્યવસ્થા શ્રી કિશોર ગોયલના નિવાસ સ્થાને કરવામાં આવી. પ્રજ્ઞાદેવીજીના પધાર્યા પછી પહેલી પ્રેસવાર્તા અમદાવાદની રિલિફ સિનેમાની સાથેની હોટેલ કેપ્રીમાં રાખવામાં આવી. પત્રકારોએ સ્ત્રિઓના વેદ ભણવા-ભણાવવા, યજ્ઞાદિ કર્મકાંડ કરવા કરાવવા વિષય પર અનેક પ્રશ્નો પુછ્યા. આચાર્યાજીના ઉત્તરોથી લગભગ બધાં જ પત્રકારો સંતુષ્ટ થયા પરિણામ એ આવ્યું કે બીજે દિવસે અમદાવાદથી પ્રકાશિત તથા ગુજરાતી અને અંગ્રેજી બધાં જ વર્તમાનપત્રોમાં બોલ્ડ હેડલાઈન સાથે છેલ્લા મુખ્ય પૃષ્ઠપર વ્યાપક પ્રસિદ્ધિ મળી.

વર્તમાન પત્રોમાં મળેલ વ્યાપક પ્રસિદ્ધિને કારણે યજ્ઞ ચાલતો હતો દરમ્યાન અમદાવાદના જાણીતા પૌરાણિક પંડીતજી યજ્ઞ સ્થળે પોતાના બે શિષ્યો સાથે આવ્યા. બ્રહ્મચારિણીઓનો વેદપાઠ સાંભળીને કહે કે આવી રીતે તો ગમે તે કોઈ વેદપાઠ કરી શકે, આમાં નવું શું છે – તો મારી વિનંતીથી આચાર્યાજીએ બ્રહ્મચારિણીઓને ઇશારો કર્યો અને શરુ થયો અષ્ટવિકૃતિ વેદપાઠ - ઘનપાઠ, જટાપાઠ, માલાપાઠ વિગેરે. પૌરાણિક પંડીતજીએ પોતાના બંને કાનમાં આંગળા ખોસ્યા અને બોલ્યા હરિ... હરિ... ઘોર પાપ. અને ત્યાથી ભાગ્યા.

બીજા દિવસે બીજા એક પૌરાણિક વિદ્વાન્ પં. વિષ્ણુદેવ પધાર્યા. તેઓ કન્યાઓનો વેદપાઠ સાંભળી અત્યન્ત પ્રસન્ન થયા, આંખોમાં આંસુ આવી ગયા. યજ્ઞસત્રના સમાપન પછી તેમને બે શબ્દ કહેવાની વિનંતી કરી તો તેમણે કહ્યું કે આજે તમે ઋષિ દયાનન્દનું સ્વપ્ન સાકાર કર્યુ છે.

આવી જ રીતે હું જ્યારે પૂર્વ આફ્રિકાના દારેસલામ નગરની આર્યસમાજની સેવામાં હતો ત્યારે પુષ્ટી માર્ગીય વૈષ્ણવ સમાજના વિદુષી ઇન્દિરા બેટીજી પધાર્યા હતા. તેઓ પોતાની ભાગવદ્ કથામાં વારંવાર કહેતા કે આપણું ધર્મપુસ્તક વેદ છે અને ધર્મનું નામ વૈદિક ધર્મ છે. એકવાર એમની સાથે ચર્ચા કરવાનો મોકો મળ્યો તો વેદની વાત કરવા બદલ મેં એમને અભિનન્દન આપ્યા. તો મને કહે કે હું જ્યારે બનારસમાં વેદ ભણવા માટે ગઈ તો સ્ત્રી હોવાને કારણે ત્યાંના પંડિતો મને વેદ ભણાવવા રાજી નહોતા.

પ્રત્યુત્તરમાં મેં કહ્યું – માતાજી મને એટલા માટે જ દયાનન્દ અને આર્યસમાજ ઉપર ગર્વ છે, અને એમના જ પ્રભાવને કારણે એજ બનારસમાં આર્યસમાજના ગુરુકુલ (પાણિની કન્યા મહાવિદ્યાલય – વારાણસી)માં કન્યાઓને વેદનું સર્વાંગી જ્ઞાન આપવામાં આવે છે.

ઇન્દિરા બેટીજીએ પણ સ્વીકાર કર્યો કે હા આર્યસમાજ બાકીના સમાજ કરતા આ વિષયમાં સૈંકડો વર્ષ આગળ છે.

છેલ્લે એક વાત. કદાચ સમગ્ર વેદીક વિદ્વાનોમાં ઋષિ દયાનન્દ એકમાત્ર – પહેલા અને છેલ્લા છે જેમણે વિવાહ સંસ્કારની સમાપ્તિમાં કન્યાને આશિર્વાદ વચનમાં કહ્યું છે સામ્રાજ્ઞી ભવ – મહારાણી બનજે.

આજે દુર્ભાગ્યે જે મહાપુરુષ સ્ત્રીને પત્ની નહીં પણ ગૃહસ્થાશ્રમની મહારાણી તરીકે જોઈ હોય એ મહાપુરુષને આજે પણ સમાજની મોટાભાગની સ્ત્રિઓએ એ સ્થાન નથી જેના એ અધિકારી છે.

समाचार दर्पण

धन की शुद्धि के लिए दान जरूरी

असमर्थ **महिला कल्याण समिति** के संस्थापक पण्डित रामनिवास अहिरका ने **नरवाना रोड** पर समिति के कार्यालय में समिति के पाक्षिक यज्ञ के बाद अपने श्रद्धालुओं को धन की शुद्धि के उपाय बतलाते हुए कहा कि जिस प्रकार भूमि से पहली बार निकालने वाली धातुओं को तब तक तपाया ना जाए वे अशुद्ध रहती है। इसी प्रकार धन को चाहे कितनी भी ईमानदारी से क्यों ना कमाया गया हो जब तक उसमें से कुछ अंश पात्र जरूरतमंदों को दान नहीं दिया जाता वह अशुद्ध रहता है। दुनिया की सभी शुद्धियों में धन की शुद्धि सबसे श्रेष्ठ है क्योंकि संसार के प्राय: सभी काम धन से ही सिद्ध होते है। लेकिन दान देते समय इस बात का विशेष ध्यान रखे कि दान प्राप्त करने वालों को यह अनुभव ना हो कि हम उन पर कोई अहसान कर रहे है। क्योंकि दान प्राप्त करने वाले व्यक्ति दान देने वाले व्यक्तियों को दान देने का मौका दे कर उन्हें परमात्मा के हवा, पानी, ऊर्जा, भूमि, आकाश आदि मुफ्त में दिये उपहारों से उऋण कर रहे है। ऐसे सोचने से न तो दान देने वालों में अहंकार पैदा होगा और न ही दान लेने वालों में हीन भावना पैदा होगी। इस मौके पर धर्मवीर शर्मा, राहूल शर्मा, गौरव शर्मा, सुशील शर्मा, सोमदत, वेदपाल डोहला, किताबो देवी, सीमा शर्मा, सुदेश आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में 134वां ऋषि निर्वाण दिवस सम्पन्न

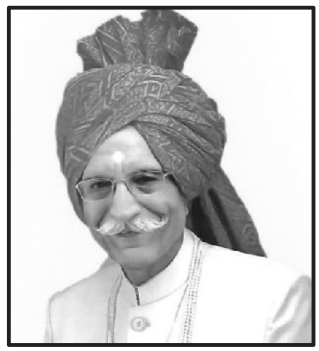

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में आयोजित 134वें निर्वाणोत्सव, रामलीला मैदान, नई दिल्ली के अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए सभा प्रधान महाशय धर्मपाल आर्य ने कहा की-सामाजिक कुरीतियां तथा जातिगत विषमता मिटाने में महान सुधारक महर्षि दयानन्द का अनुपम योगदान रहा है, जिन्होंने लोक-हित सनातन वैदिक सांस्कृतिक रक्षा करके विश्व को एक नई दिशा प्रदान की थी। वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार ने कहा-महर्षि दयानन्द सरस्वती का सम्पूर्ण जीवन वेद प्रचार तथा मानवता को समर्पित रहा। सभा महामन्त्री सतीश चड्‌डा ने देश पर शहीद सैनिकों के परिवारों तथा सुदुर वनवासी क्षेत्रों के उपेक्षित लोगों की सहायतार्थ आगे आने का आह्‌वान किया।

आर्य संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती तथा महाशय धर्मपाल ने युवा विद्वान एवम् कर्मठ कार्यकर्त्ताओं आचार्य सामश्रवा, अभिमन्यु चावला, शशि चोपड़ा को स्मृति चिन्ह व शाल देकर सम्मानित किया।

89वां वार्षिकोत्सव समारोह सम्पन्न

आर्य समाज करोल बाग, नई दिल्ली का 89वां वार्षिकोत्सव दिनांक 7 दिसम्बर से रविवार 10 दिसम्बर तक बड़ी श्रद्धापूर्वक बनाया गया। 7 दिसम्बर को आर्य महिला सम्मेलन दोपहर 12.00 बजे से सायं 4.00 बजे तक सम्पन्न हुआ। 8 दिसम्बर को प्रात: कालीन यज्ञ जिसके ब्रह्मा: डॉ. रघुराज शास्त्री जी तथा वेदपाठ गुरुकुल छात्रों द्वारा सायंकालीन युवा सम्मेलन सायं 7.00 बजे से 9.00 बजे सम्पन्न हुआ।

भजन का कार्यक्रम बहुत ही मनमोहक था। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार 10 दिसम्बर को प्रात: 9.00 बजे से 10.30 बजे तक तथा कार्यक्रम के पश्चात् ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

ऋषि निर्वाण दिवस

इन्दौर (मध्य प्रदेश) के संभाग के समस्त आर्य समाजों के संयुक्त तत्त्वावधान एवं श्री गोविन्द जी आग्र के अध्यक्षता में आर्य समाज मल्हार गंज इन्दौर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 134वां ऋषि निर्वाण दिवस का भव्य आयोजन किया गया।

ऋषि निर्वाण दिवस के इस भव्य समारोह में बाल नाट्य एवं बच्चों द्वारा प्रस्तुत प्रेरक गीत एवं महर्षि जी के जीवन के संस्मरण मुख्य आकर्षण के केन्द्र रहे।

सांख्य दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के द्वारा **'महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल' ऋषि उद्यान, अजमेर** में 'महर्षि कपिल मुनि' विरचित 'सांख्य दर्शन' का अध्यापन स्वामी विष्वङ् परिव्राजक जी द्वारा 01 जनवरी 2017 से विधिवत् रूप से अध्यापन कराया जायेगा। यह दर्शन 6 महीने में सम्पूर्ण हो जावेगा।

इस काल में ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त उपदेश व प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा। समय-समय पर विविध विषयों पर विद्वानों द्वारा कक्षाएँ भी होती रहेंगी। ब्रह्मचारियों हेतु निवास और भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। **सम्पर्क सूत्र:-स्वामी विष्वङ्-९४१४००३७५६**

सम्पर्क समय-०९.००-१०.०० प्रात: १२.३०-०१.३० मध्याह्न

वैदिक संसार सम्मानित

विगत 6 वर्षो से अनवरत् प्रत्येक माह इन्दौर (मध्य प्रदेश) से प्रकाशित **मासिक पत्रिका वैदिक संसार** के प्रकाशक सुखदेव शर्मा को आर्य जगत् में उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन तथा वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान हेतु ठाकुर विक्रमसिंह ट्रस्ट, दिल्ली तथा निर्माण पार्टी के प्रमुख दानवीर राजर्षि ठाकुर विक्रमसिंह जी द्वारा शाल, प्रशस्ति पत्र तथा एक लाख रूपये का चेक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

101वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज 'शहर' बड़ा बाजार, सोनीपत की ओर से सैक्टर-14 स्थित सामुदायिक केन्द्र (कम्यूनिटी सैन्टर) में आयोजित 101वें वार्षिकोत्सव सम्पन्न। वार्षिकोत्सव के पहले चरण में क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजक किया गया। विख्यात विद्वान संन्यासी स्वामी मुक्तानन्द जी परिव्राजक (अजमेर), वैदिक ग्राम परियोजना के अध्यक्ष आचार्य रवीन्द्र जी आचार्य धर्मवीर जी के सानिध्य में आचार्य संदीप जी दर्शनाचार्य जी की अध्यक्षता में प्रतिभागी शिविरार्थियों को ईश्वर, धर्म, योग के सच्चे स्वरूप का बोध शास्त्र परिचय के साथ-साथ ध्यान का क्रियात्मक प्रशिक्षण भी दिया गया।

वार्षिकोत्सव के दूसरे चरण में वैदिक तलस्पर्शी विद्वान् डॉ. वेदपाल जी (मेरठ), वैदिक सिद्धान्त मर्मज्ञ पं. रामचन्द्र आर्य जी (सोनीपत) जी द्वारा धर्मप्रेमी श्रोतावृन्द का सुन्दर मार्गदर्शन किया गया। अमृतसर से सुप्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री दिनेश आर्य 'पथिक' के मनोहारी भजनोपदेश भी हुए समापन सभा में आर्य समाज के शताब्दी वर्ष (2016) के निमित्त निर्मित शताब्दी स्मारक ग्रन्थमाला प्रकाशन समिति की ओर से पुनः प्रकाशित ग्रन्थों ''युक्तिवाद'' (पं. संरक्षण आर्योपदेशक), पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय तथा गीता का रहस्य, सम्पादक, आचार्य प्रदीपकुमार शास्त्री, खेली का विमोचन किया गया।

अथर्ववेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

महिला आर्य समाज मानसरोवर, जयपुर ने चार दिवसीय अथर्ववेद पारायण यज्ञ के साथ 23वां वार्षिक उत्सव मनाया, पूर्णाहुति 26.11.17 रविवार को हुई। पारायण यज्ञ के ब्रह्मा पं. देशराज सत्येक्षु (भरतपुर) तथा वेदपाठी श्रीमती स्मृति आर्या (दिल्ली) व श्रीमती श्रुति (जयपुर) रहे। पलवल के युवा ओजस्वी भजनोपदेशक नरदेव बेनीवाल ने स्वर माधुर्य बिखेरा। पूर्णाहुति के पश्चात् अंतिम सत्र के मुख्य अतिथि राजस्थान के लोकायुक्त माननीय सज्जन् सिंह कोठारी ने अपने संबोधन में वैदिक यज्ञों को पर्यावरण संकट-निवारण का एकमात्र साधन बताया।

गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव

गतवर्षो की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल, टीकरी, जानी, मेरठ में मकर सौर संक्रान्ति के पावन अवसर पर 13 व 14 जनवरी 2018, तदनुसार माघ कृष्ण द्वादशी एवं त्रयोदशी वि.स. 2074 शनिवार व रविवार को वार्षिकोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जा रहा है। जहाँ 13 जनवरी 2018 को वेदों के मूर्धन्य विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी (पं. बुद्धदेव विद्यालंकार) की 49वीं पुण्यतिथि के अवसर पर अखिल भारतीया वैदिक शोध संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। जिसका विषय है ''उपनिषदों में विविध विद्याएँ।'' इसमें देश के विभिन्न स्थानों से आये हुए सुप्रसिद्ध विद्वज्जन-आत्मा का स्वरूप, विवध देवताओं (अग्नि, इन्द्र, आदि) का स्वरूप, सृष्ट्युत्पत्ति विद्या-विविध लोक, शरीर, जीव-जन्तु आदि, प्रकृति माया का स्वरूप, ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, ब्रह्म की विविध रूप में उपासना जैसे उपशीर्षकों पर अपना शोध लेख प्रस्तुत करेंगे, जो अन्तर्राष्ट्रीय मानक त्रैमासिकी शोध पत्रिका 'पावमानी' (ISSN-2223-6329) में प्रकाशित किये जाएँगे।

10 जनवरी 2018 को प्रारम्भ किये यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति, नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार तथा वेदारम्भ संस्कार 14 जनवरी को होगा। जिसमें समागत विद्वानों के प्रवचन एवं सुप्रसिद्ध भजनोपदेशकों के भजन, ब्रह्मचारियों के आकर्षक एवं रोचक बौद्धिक एवं शारीरिक बल प्रदर्शन जैसे कार्यक्रम होंगे।

अतः आप सभी वेदानुरागी सज्जन इष्टमित्रों सहित सपरिवार गुरुकुल प्रभात आश्रम में सादर आमन्त्रित हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ उठायें एवं पुण्य के भागी बनें।

निवेदकः-

कुलाधिपति	प्रधान	मन्त्री
स्वामी विवेकानन्द सरस्वती	**विवेक शेखर**	**डॉ. वाचस्पति**
(गुरुकुल प्रभात आश्रम)		
(8923591872)		

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यो की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

टंकारा यात्रा 2018

सैरकर दुनियाँ की नादान जिन्दगानी फिर कहाँ। जिन्दगानी भी रही तो नौजवानी फिर कहाँ।।

।। यात्री बनकर आयें-मित्र बनकर जाएं ।।

आर्यों का तीर्थ स्थल टंकारा चलो।
टंकारा, पोरबंदर, सोमनाथ, द्वारकापुरीधाम, द्वीव, अहमदाबाद

टंकारा यात्रा अवधि 9 दिन

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा एवं उप-कार्यालय आर्य समाज अनारकली मंदिर मार्ग एवं श्री रामनाथ सहगल जी के प्रेरणा से धर्म प्रेमी बहनों व भाइयों के लिए महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा यात्रा एवं द्वारकापुरी धाम तीर्थ यात्रा का सुनहरी अवसर। 07.02.2018 को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से राजधानी द्वारा चलेंगे व 15.02.2018 को वापस दिल्ली यात्रा समाप्त होगी। इस यात्रा में जाने के लिए यात्रियों से निवेदन है कि वे अपनी सीट यथाशीघ्र बुक करवा लें, जिससे कि रेलवे में कन्फर्म बुकिंग मिल सके। इस यात्रा में बस-रेल व आने-जाने का सभी खर्च शामिल है।

कार्यक्रम व दर्शनीय स्थल : ❑ 07.02.2018 नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से राजधानी द्वारा अहमदाबाद के लिए प्रस्थान। ❑ 08.02.2018 भारत के चार पवित्र नगरों में से एक गोमती गंगा, नागेश्वर, द्वारकाधीश मन्दिर ❑ 09.02.2018 श्रीकृष्ण महल व भेंट द्वारका, गोपी तालाब ❑ 10.02.2018 द्वारका से पोरबन्दर गांधीजी का जन्म स्थान, तारा मंडल, आर्य गुरुकुल, भारत माता मन्दिर ❑ 11.02.2018 सोमनाथ का लाईट एण्ड साउंड शो, जहां श्री कृष्ण जी को तीर लगा था व द्वीव का समुद्री किनारा व सनसैट। ❑ 12.02.2018 प्रातः टंकारा के लिए प्रस्थान शिवरात्रि बोध उत्सव शोभा यात्रा व महर्षि दयानन्द जन्म स्थान। ❑ 13.02.2018 शिवरात्रि बोध उत्सव शोभा यात्रा व महर्षि दयानन्द जन्म स्थान। ❑ 14.02.2018 प्रातः नाश्ते या लंच के पश्चात अहमदाबाद का अक्षरधाम मन्दिर एवं लाईट एण्ड साउंट शो। ❑ 15.02.2018 नई दिल्ली स्टेशन के लिए समाप्त।

नोटः- इन सभी स्थानों पर रहने व खाने की व्यवस्था होटल में होगी और टंकारा में रहने व खाने की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क है अगर किसी व्यक्ति के पास रेलवे का पास है तो वह 14000/- रूपये देकर जा सकता है।

यात्री किराया-राजधानी 3 ए.सी. 18500/-, राजधानी 2 ए.सी. 20400/-, ❐ सीनियर सिटिजन- राजधानी 3 ए.सी. 17600/-, राजधानी 2 ए.सी. 19000/-, ❐ महिला सीनियर सिटीजन- राजधानी 3 ए.सी. 17200/-, राजधानी 2 ए.सी. 18600/-। By Air Delhi to Ahmedabad 22700/- जब तक टिकतें मिलती रहेंगी। (आगे यात्रा बस द्वारा होगी)

यात्रा नियम : ❐ कहीं पर किसी मन्दिर, किले व नौकारोहण के समय कोई टिकट लेना होगा तो वे यात्री स्वयं लेंगे। ❐ कार्यक्रम में समय के अनुसार परिवर्तन करने का अधिकार, संयोजक का होगा। ❐ हमारी यात्रा में अकेली महिला व वृद्ध महिलाऐं भी यात्रा कर सकती हैं क्योंकि हमारी यात्रा का माहौल घर परिवार जैसा होता है। ❐ सभी यात्रियों से निवेदन है कि वे अपना चैक या ड्राफ्ट ARYA TRAVEL अथवा विजय सचदेव के नाम कोरियर या पोस्ट द्वारा भेज सकते हैं। ❐ इन यात्राओं में प्रत्येक कमरे में दो व्यक्ति ठहरेगें। इस यात्रा में रहने व खानें की व्यवस्था Hotel, Tourist, Class, Non Star, Neat & Clean होगी। इस यात्रा में खाना शाकाहारी होगा। ❐ इस यात्रा में रेलवे की बुकिंग कम्पयूटर द्वारा जो सीट नम्बर मिलेगा वही आपका सीट नम्बर होगा। ❐ कृपया सभी सीनियर सिटीजन यात्री अपना आयु का प्रमाण पत्र साथ रखें। ❐ इस यात्रा में दोपहर का भोजन कभी-कभी सम्भव नहीं हो पाता उस समय के लिए यात्री अपनी पसन्द की खाने-पीने की मन पसन्द वस्तुएं अपने पास रखें। ❐ सीट बुक कराने के लिए ए.सी. के यात्री 8000/- रूपये व हवाई जहाज के यात्री 12000/- अग्रिम राशि के रूप में जमा करवा दें। इस यात्रा में एक बार टिकट बन जाने पर अगर यात्री टिकट रद्द करवाता है तो 4000/- रूपये व हवाई जहाज के यात्री 8000/- रूपये प्रति व्यक्ति कटवाने होंगे जाने से दो दिन पहले रद्द करवाने पर 70 प्रतिशत व्यक्ति कटवाने होंगे। क्योंकि होटल व बस बुक हो चुकी होती है।

आर्य ट्रैवल

अमित सचदेवा (मो. 9868095401, 9350064830), **विजय सचदेवा (सुपुत्र स्व. श्री श्यामदास सचदेवा)**

2613/9, चूना मंडी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, फोन : 011-45112521, मो. 09811171166

जुकाम में असरकारक है काली मिर्च

मौसम बदलने के साथ ही मनुष्य के शरीर में भी परिवर्तन देखने की मिलते हैं। इनमें से सबसे प्रमुख बीमारी जुकाम है जिसके लक्षण सामान्यत: अधिकतर लोगों में दिखाई पड़ते हैं। अगर घरेलू उपचार के तरीके अपनाए जाएं तो जुकाम से बचा जा सकता है।

- ❑ सूखी खाँसी में काली मिर्च तथा मिश्री को मुँह में रखने से लाभ होता है।
- ❑ गले में खराश हो तो काली मिर्च चूसें।
- ❑ संतरे के रस में सेंधा नमक व काली मिर्च मिलाकर उसका नियमित सेवन करने से आंखों की ज्योति बढ़ती है।
- ❑ काला नमक, काली मिर्च व जीरा पीसकर उसे गर्म कर लें। पेट में कीड़े हों तो चूसने से आराम मिलता है।
- ❑ मलेरिया होने पर काली मिर्च और कुटकी का चूर्ण बना लें। उसे शहद तथा तुली के रस के साथ लेने से लाभ होता है।
- ❑ खाने के प्रति अरूचि हो तो काला जीरा, अनारदाना, सफेद भुना हुआ जीरा, काली मिर्च, मुनक्का, अमचूर तथा काला नमक (10-10 ग्राम) को पीसकर चूर्ण बनायें व इसे शहद के साथ खायें।
- ❑ पुराने जुकाम में खट्टा दही, गुड़ व काली मिर्च का चूर्ण तीनों को मिश्रण कर सेवन करने से लाभ होता है।
- ❑ बलगम होने पर 8-10 काली मिर्च पीस लें। इसमें नमक मिलाकर सूंघने से बलगम पानी होकर बह जाता है।
- ❑ अदरक का रस काली मिर्च तथा नींबू का रस, तीनों को मिलाकर बच्चों को चटाने से उनकी हिचकी बंद हो जाती है।
- ❑ सांस के रोगों में काली मिर्च के अर्क का सेवन लाभप्रद है।
- ❑ काली मिर्च, भुना जीरा, हींग, प्याज का रस व सेंधा नमक मिलाकर इसका सेवन करने से हैजा दूर होता है।

टंकारा समाचार

के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

दिनांक 12, 13, 14 फरवरी 2018 को आयोजित ऋषि बोधोत्सव हेतु दिल्ली से राजकोट जाने वाली गाड़ियां का विवरण

(1) देहरादून ओखा उत्तरांचल एक्स., ट्रेन न. 19266 नई दिल्ली से राजकोट दोपहर, 1.10 बजे रविवार दिनांक 04.02.2018 **(2) सर्वोदय एक्सप्रेस, ट्रेन नं. 12478,** नई दिल्ली से राजकोट रात्रि 9.25 बजे रविवार दिनांक 04.02.2018 **(3) हापा एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12476,** नई दिल्ली से राजकोट रात्रि 9.25 बजे सोमवार दिनांक 05.02.2018 **(4) सराय रोहिल्ला पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19264,** सराय रोहिल्ला से राजकोट प्रात: 8.20 बजे सोमवार दिनांक 05.02.2018 **(5) पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19270,** पुरानी दिल्ली से राजकोट दोपहर 12-55 बजे मंगलवार दिनांक 06.02.2018 **(6) पोरबन्दर एक्सप्रैस ट्रेन न. 19264** प्रात: 8.20 वीरवार दिनांक 08.02.2018 सराय रोहिला से राजकोट **(7) सराय रोहिला राजकोट एक्सप्रैस ट्रेन न. 19580,** दोपहर 1.10 बजे दिनांक 09.02.2018 सराय रोहिला से राजकोट। **(8) आश्रम एक्सप्रेस, ट्रैन न. 12916,** पुरानी दिल्ली से अहमदाबाद प्रतिदिन 3.00 बजे, अहमदाबाद से बस द्वारा **(9) राजधानी एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12958,** नई दिल्ली से अहमदाबाद प्रतिदिन सायं 7.35 बजे, अहमदाबाद से बस द्वारा।

राजकोट से दिल्ली जाने वाली गाड़ियाँ: (1) हापा एक्सप्रैस, ट्रैन न. 12475, राजकोट से नई दिल्ली बुधवार दिनांक 14.02.2018 सुबह 6.50 बजे। **(2) राजकोट सराय रोहिला एक्सप्रैस, ट्रैन न. 19579,** राजकोट से सराय रोहिला वीरवार दिनांक 15.02.2018 दोपहर 12.15 बजे। **(3) मोतिहारी एक्सप्रैस, ट्रैन न. 19269,** राजकोट से पुरानी दिल्ली वीरवार दिनांक 15.02.2018 सायं 7:32 बजे। **(4) आश्रम एक्सप्रैस, ट्रैन न. 12915,** अहमदाबाद से पुरानी दिल्ली प्रतिदिन सायं 5.45 बजे, अहमदाबाद तक बस द्वारा। **(5) राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन न. 12957,** अहमदाबाद से नई दिल्ली प्रतिदिन सायं 5.25 बजे अहमदाबाद तक बस द्वारा।

पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी द्वारा
आर्य समाज सैक्टर-7, चण्डीगढ़ स्थित
जस्टिस पी.सी. पण्डित हॉल का उद्घाटन
चित्रमय झलकियां

जब दीवारों में दरार पड़ती है तब दीवारे गिर जाती है लेकिन जब रिश्तों में दरार पड़ती है तब दीवारे खड़ी हो जाती है।

टंकारा समाचार जनवरी 2018

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 231/2015-16-17

Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-01-2018

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.12.2017

॥ ओ३म् ॥

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) दूरभाष: (02822) 287756

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष बोधोत्सव का आयोजन 12, 13, 14 फरवरी 2018 (सोमवार, मंगलवार, बुधवार) को महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ: 07 फरवरी से 13 फरवरी 2018 तक

ब्रह्मा: आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत: श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर) श्री दिनेश पथिक (अमृतसर)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष:

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी.कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा)

बोधोत्सव

दिनांक 13.02.2018

मुख्य अतिथि: महामहिम आचार्य देवव्रत जी, (राज्यपाल हिमाचल प्रदेश के आने की सम्भावना)

विशिष्ट अतिथि: श्री जे.पी. शूर, निदेशक स्कूल्स् डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति

कार्यक्रम के सम्भावित आमन्त्रित-**श्री चैतन्य मुनि** (हिमाचल प्रदेश), **स्वामी आर्येशानन्द** (माउन्ट आबू), **स्वामी शान्तानन्द** (गुजरात) **श्री मोहन भाई कुण्डारिया** (स्थानीय सांसद), **श्री बल्लभभाई कथीरिया** (अध्यक्ष गौ सेवा सदन गुजरात), **वैदिक विद्वान डॉ. रूप किशोर शास्त्री,** (वेद विभागाध्यक्ष गुरुकुल कागड़ी), **श्री एस.के. शर्मा** (डी.ए.वी. पब्लिकेशन एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा), **श्री गिरीश खोसला** (यू.एस.ए.), **श्री वाचोनिधी आर्य** (गांधीधाम) एवं इसके अतिरिक्त देश विदेश से अनेकों विद्वान् एवं सन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यो के लिए एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा "श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि **खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, IFSC CODE PUNB0466500** में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर देवें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।**

निवेदक

शिवराजवती आर्या, उपप्रधाना

रामनाथ सहगल, मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक-रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय